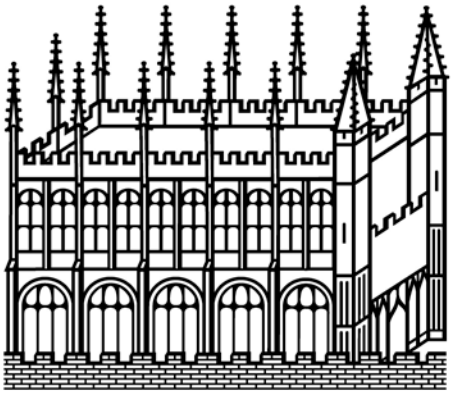


Bodleian Libraries

UNIVERSITY OF OXFORD

This book is part of the collection held by the Bodleian Libraries and scanned by Google, Inc. for the Google Books Library Project.

For more information see:

http://www.bodleian.ox.ac.uk/dbooks



This work is licensed under a Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 2.0 UK: England & Wales (CC BY-NC-SA 2.0) licence.

Hindu C 282

13.D.12.

Indian Institute, Oxford.
The Lucknow Sparks Library.
Presented
by
Munshi Newul Kishore.

Avatār-siddhi.

Avtar Siddhee

अवतार सिद्धि

اوتار سدھی

कोलाख्य नगर निवासि पचौली
यमुनाशंकर नागर ब्राह्मण विरचित

जिस को

उक्त श्री पण्डित जी ने आधुनिक परमत शिक्षित मनुष्यों
को प्राचीन वैदिक धर्म्म जन्य अवतार प्रतिमा
पूजनादि से विमुख विचारि कर संस्कृतार्य्यग्रथों
को अति कठिन जान उनके अत्यल्पही परिश्रम
से अति घोर नास्तिक रूप भ्रम दूर करने के
निमित्त अत्यन्त सरल देशभाषा में वेदि-
क ऋचाओं के अर्थ प्रमाण सहित
निर्मित किया

उसे

आर्य्यजन पूजित वैदिक मत तत्पर परोपकारि श्रीमान् परम धा-
र्म्मिक मुन्शी नवलकिशोर जी ने आर्य्यावर्त निवासि आर्य्यजनों के
हितार्थ अति शुद्धता पूर्व्वक

स्वकीय

लखनऊ

पाषाण यन्त्रालय में मुद्रित कराया

अक्टूबर सन १८८२ ई०

विज्ञप्ति

इस महीने अर्थात अक्तूबर सन १८८२ ई० पर्य्यन्त जो पुस्तकें छपने के लिये तय्यार हैं वह इस फेहरिस्त में लिखी हैं और उन का मोल भी बहुत किफायत से घटाकर लिखा है परन्तु व्यापारियों के लिये और भी सस्ती होगी जिनको व्यापार की इच्छा हो वह छाप रखाने के मुहतमिम अथवा मालिक के नामखत भेज कर क़ीमत का निर्णय करलें ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
भाषा इतिहास	विनयपत्रिका बा० सी०	आनंदरघुनंदन
महाभारत	विनयपत्रिका बा० शि०	भ्रमजालनाटक
रामायण रामविलास	विष्णुपुराण भाषा	**वेदान्त**
रामायण सटीक मय	वाराहपुराण	योगवाशिष्ठ
भानमदीपिका कोष	स्कंदपुराण	आनंदाऽमृतवर्षिणी
आदि	भविष्योत्तरपुराण	सांख्यतत्वकौमुदी
रामायण तुलसीकृत	लिंगपुराण	**काव्य**
नथा मोटे अक्षरों की	ब्रह्मोत्तरखण्ड	सूरसागर
मय तसदीर वक्षेपक	शुक्रनीति	कृपासागर
रामायण तुलसीकृत	रसवृष्टि चरमचंद्रोदय	विश्रामसागर
टीका सुखदेव कृत	मुद्रामाचरित्र	प्रेमसागर
रामायण शब्दार्थको	कृष्णगीतावली	ब्रजविलासबड़ावड़ो
रामायण का इतिहास	स्त्रीअनुरागरस	कृपाप्रिया
रामायण भानमर्दापिका	सोहागरलीला	विनयमुक्तावली
रामायण कवितावली	रामलीला	अनेकार्थ
रामायण गीतावली	**नाटक**	छन्दोर्णवपिंगल
सटीक	प्रबोधचंद्रोदय	रसराज
भुवनेश भूषण	रामाभिषेक	सतसई मूल व सटीक

॥ओ३म्॥

॥ एकमेवाद्वितीयम्॥

॥एकं एव अद्वितीयं ब्रह्म तत् सत्॥

॥श्रीपरमात्मनेनमः॥ श्रीगुरुचरणेभ्योनमः॥

॥श्रीरामकृष्णायनमः॥ श्रीसर्वेभ्योदेवेभ्योनमः॥

॥ नमोवयं ब्रह्मिष्ठाय॥

॥विज्ञापन॥

॥सर्व सनातनीय सत्य वेदोक्तधर्मावलम्बी आर्य्य सज्जनोंको विदितहो कि इस सांप्रतकालमें युगराजधर्मकी बलाढ्यतासे अब इसभारतवर्षमें नवीन २ आचार्य उत्पन्नहोय अपनी २ प्रज्ञानुकूल वेदोक्तधर्ममें कल्पनाकर सनातनीय वेदोक्तधर्म आम्नायकी निंदाकरतेहैं। अरु अपने कल्पितमतानुसार कुछ वेदभागकोंमान तिसकाअर्थ स्वानुकूलकरतेहैं। अरु कुछ वेदभाग जो कि उनके कल्पितमतके विरोधीहैं तिनको क्षेपक अप्रमाण करतेहैं। अरु पूर्वके वेदार्थप्रकाशक आचार्यों-को जो कि इस भारतभूमिकी आर्य्यप्रजाके ज्ये-

ष्ठ श्रेष्ठ वृद्ध भयेहैं तिनकों नानाप्रकारके दूषणदे निन्दाकरतेहैं। अरु वेदादिकोंकरके प्रतिपाद्य जे इन्द्रादि देवार्चन अरु रामकृष्णादि ईश्वरअवतारकी उपासना जो कि अंतःकरणकी शुद्धि अरु स्थिरताका मुख्यसाधनहैं तिसको नानाप्रकारकी कुतर्कोंसेअप्रमाणकरतेहैं अरु तत्प्रतिपादक श्रुतिवाक्यको-छिपावतेहैं अरु कुछ श्रुतिको अप्रमाणकर अरु कुछ वेदभागके अर्थ अन्यथाकर आप अपनी कल्पनासे अपनामत जो कि इससमयके अन्यधर्मी अन्यदेशीराजाओंके मतानुकूलहै तिसको राज्यमेंस्वमान्यताकी अभिलाषासे प्रकट करतेहैं अरु अपनेआपको सनातनीय वेदोक्तधर्मप्रकाशकआर्य्य माननेहैं अरु अपनेही पूर्व प्रकाशितवाक्यको उत्तरकालमें आपही अप्रमाणकरतेहैं अरु अपने कथित वाक्य जो कि स्वकल्पनासे प्रतिपादनकियेहैं तिनको अब अप्रमाणकर अपनीभूलको ग्रंथके शोधक अरु मुद्रितकर्ताके मस्तकपरडाल आपसत्यवादी बनतेहैं। एतदर्थ ऐसे अनवस्थित चित्तवालेके वाक्य जो कि श्रेष्ठ बुद्धिमानपुरुषोंकरके किसीप्रकारभी मन्तव्यनहीं तिनहींके वाक्यमें वो पुरुष जो कि प्रतीची विद्यारूपपवनकरके कुतर्को-

में प्रसरितप्रज्ञहैं सो विश्वास मानके आप वेदरह
स्य शास्त्र सूक्ष्मविचारशक्तिरहित केवल वाचाल
पनेसेईश्वरके अवतारादिकोंविषे नानाकुतर्ककर
अप्रमाणकरतेहैं सो उनका कहना अरु मानना
विना वेदश्रुतिके सूक्ष्मविचारके सर्व वृथा अरु अ-
प्रमाण ही है ॥

॥विनय॥

॥जो इस भारतवर्षके सनातनीय आम्नाय-
प्रमाण वेदोक्त धर्मके माननेवाले सर्वप्रकार आ
स्तिकप्रज्ञ सूक्ष्मविचारशील आर्य्यपुरुषोंके विचा
रार्थ ईश्वरअवतारसिद्धिको वेदसिद्धान्त पराविद्या
की श्रुतिप्रमाणसे गुरुशिष्यके संवादद्वारा आ
त्मवेत्ताओंका सेवक प्रकट करताहै। जो सज्जन
आस्तिकनित्याआम्नाय पूर्वक वेदोक्तधर्मके मान
नेवालेहैं सो इसग्रंथकारकी विनयको स्वीकार
कर श्रद्धान्वित इस अवतारसिद्धि नाम्नाग्रंथको
सूक्ष्मबुद्धिसे विचार ईश्वरके नित्य नैमित्तक स-
मान विशेष अवतारविषयक संशयरहित पर-
म आस्तिक आत्मानुभवी ज्ञानआत्माहोय ॥

॥तावद्गर्जन्ति शास्त्राणि जम्बुकाविपिनेयथा॥
॥नगर्जतिमहाशक्ति र्यावद्वेदान्तकेसरी॥१॥

॥ शिष्य उवाच ॥

॥ हे गुरो इस भारतवर्षकी सनातनीय आम्नाय पूर्वक कर्म उपासना ज्ञान कांडत्रयीरूप ऋगादिवेद अरु मनु याज्ञवल्क्यादिस्मृति अरु भारतादि इतिहास ब्रह्मवैवर्तादि पुराण इनकरकेप्रतिपाद्य जे धर्मरूपसे कर्तव्यता ते सर्व अपने २ अधिकारानुसार प्रमाण ही हैं। अरु इनविषे जो धर्मरूपसे कर्तव्यता प्रतिपादन कियाहै तिस २ विषे जो किंचित् परस्पर विरुद्ध प्रतीत होयहै सो सर्व अधिकारीकेभेदसेहै अप्रमाण कुछनहीं ताते जो पूर्व-आम्नायप्रमाण इस भारतवर्षीय आर्य्यप्रजाको प्रमाणहै सोई सर्व आपके वाक्यसे आस्तिकरीत्या हमको भी प्रमाणहै क्यों जो सर्वसे मुख्यप्रमाण सनातनीय आम्नायहै जो कदापि आम्नाय त्यागदेवें तो ईश्वरवेदादिकोंको प्रमाणमनाय शेषरहे नहीं जिनकी आम्नायमें ईश्वरवेदादि अप्रमाणहैं तिनकी कुछ हानिनहींहोती अरु जिनकी आम्नायमें ईश्वरवेदादि प्रमाणहैं तिनकी कुछ विशेषता नहींहोती ताते ईश्वरवेदादि जो प्रमाणहैं सो केवल एक सनातनीय आम्नायरीत्या ही प्रमाणहैं आम्ना-

यके त्यागे कुछ भी प्रमाण नहीं ताते जो कुछ प्रमाण है सो सर्व एक आम्नाय के ई प्रमाण से प्रमाण है सो अस्तु । परंतु हे भगवन् समय राज्यानुकूल कई एक नवीन आचार्य भये हैं सो ऐसा कहते हैं कि निराकार निर्विकार अखंड पूरिपूर्ण सच्चिदानन्द सर्वशक्तिमान् परमेश्वर है तिसका अवतार होता नहीं क्योंकि जो निराकार परमेश्वर पर्वसे बड़ा है यह मनुष्यादि शरीर गर्भस्थानादि स्थान जो अति अल्प हैं तिस विषे नहीं समाय सकता । अरु वो परमेश्वर सर्व शक्तिमान् है ताते विनाई अवतार धारण किये सर्व कुछ करने सकता है इसी से सर्व शक्तिमान् परमेश्वर का अवतार होना असंभव है अरु तिसका मानना अरु कहना अप्रमाण है ॥ अरु आप तथा अन्य जे सनातनीय आम्नाय प्रमाण मानने हारे हैं सो परमात्मा परमेश्वर का अवतार होना प्रमाण करते कहते अरु मानते हैं । ताते हे भगवन् श्रुतिओं के प्रमाण से इन कुतर्कियों के वाक्य पर युक्ति अनुभव से जैसा होय तैसा हमारे बोधार्थ कृपा कर निरूपण करिये ॥

॥श्रीगुरुरुवाच॥

॥ हे सौम्य तुमने जो सनातनीय आम्नाय प्रमाण

वेदादि सर्व प्रमाण माने सो यथार्थ है। परंतु जो ऐसा कहते हैं कि निराकार निर्विकार अखंड परिपूर्ण सर्व शक्तिमान् परमेश्वर है सो सर्व से बड़ा है ताते छोटी वस्तु जे शरीरादिक तिस विषे वो समाय सकता नहीं इसी से परमेश्वर का मनुष्यादि रूप से अवतार होना असंभव है अरु मानना अप्रमाण है १। अरु वो परमेश्वर शक्तिमान् है विनाई अवतार धारण किये सर्व कुछ करने को समर्थ है एतदर्थ भी परमेश्वर का अवतार होना अरु मानना असंगत अरु अप्रमाण ही है हे सौम्य ऐसे कुतर्क से कहने हारे आचार्य श्रुति विचार अनुभव से शून्य हैं अरु उन के वाक्य मानने वाले भी सूक्ष्म विचार शून्य मूर्ख हैं हर हर बड़ा आश्चर्य है २ कि जो आचार्य परमात्मा परब्रह्म को निराकार निरावयव भी कहते हैं अरु यह भी कहते कि सर्व से बड़ा होने के कारण छोटी वस्तु जे देहादिक तिस विषे नहीं समाय सकता। सो उन का कहना अविचारित आग्रह वश है। हे सौम्य देखो निराकार निरावयव सर्व से बड़ा आकाश है जोकि परमात्मा की अपेक्षा अति स्थूल है सो भी घटादिक छोटी वस्तुओं में पूर्णता से समाय के घटादिकों की उत्पत्ति विनाशादि धर्म से रहित अपने स्वरूप में निर्विकार ज्यों का त्यों है। अरु परमात्मा तो

{सूक्ष्माच्चतत्सूक्ष्मतरंविभाति} मुंडक उ० के २ मुंडक की १ वीं श्रुति में॥ आकाश से भी महा सूक्ष्म चैतन्य है ताते आकाश केई दृष्टान्त प्रमाण महा सूक्ष्म परमात्मा आकाशादि सर्व विषे व्याप्त है। अरु जो वस्तु साकार सावयव होती है सो वस्तु अपने से छोटी वस्तुओं में नहीं समाती। जैसे पर्वत साकार सर्व से बड़ा है सो छोटे घटादि को में नहीं समाता। अरु जो वस्तु आकाश से भी महा सूक्ष्म है सो तो परिपूर्ण सर्वत्र व्याप्त है। अरु जो वस्तु छोटी वस्तु में नहीं समाती सो वस्तु एक देश में होने अरु एक देश में न होने से पूर्णता के अभाव से परिच्छिन्न अल्प कहावती है अरु जो वस्तु परिच्छिन्न अल्प होती है सो वस्तु नाशवान् है। तथाच {यदल्पंतन्मर्त्य०} छांदोग्य उ० के प्र०७ में की २४ मी श्रुति में॥ ताते हे सौम्य जो कोई आचार्य परमात्मा का छोटी वस्तु में समाता नहीं मानते उन के मत से परमात्मा जो श्रुतियों के {पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते} बृहदारण्य उ० के अ०५ में की आदि में॥ इत्यादि वाक्य प्रमाण करके सर्व प्रकार सर्व रूप से परिपूर्ण है सो परिच्छिन्न अल्प विनाशी सिद्ध होता है। ताते उन का कहना अप्रमाण ही है अरु श्रुति के

प्रमाण से परमात्मा परिपूर्ण सर्व व्यापी है। जैसी जो आकृति है तिस विषे तैसे ही आकार से समान एकरस स्थित है बड़ी उपाधि के साथ बड़ा है अरु छोटी उपाधि के साथ छोटा है परंतु जहां है तहां उपाधि के सर्व धर्मो से रहित अपने विषे आप ज्यों का त्यों है। तथाच {वायुर्यथैको भुवनं प्रविष्टो रूपं रूपं प्रति रूपो बभूव। एकस्तथा सर्व भूतान्तरात्मा रूपं रूपं प्रति रूपो बहिश्च॥ १०॥ सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षुर्न लिप्यते चाक्षुषैर्बाह्य दोषैः। एकस्तथा सर्व भूतान्तरात्मा न लिप्यते लोकदुःखेन बाह्यः॥११॥} कठवल्ली उ० की ५ मी वल्ली में। तातेत्रैलोक्य विषे यावत् नामरूपात्मक उपाधि है तावत् सर्व विषे। अंतर्यामी एक परमात्मा ही है अरु उपाधि के धर्म सो कदापि स्पर्श मात्र भी नहीं करता अपने आप विषे ज्यों का त्यों निर्विकार ही है॥

॥हे सोम्य औोर श्रवण करो बृहदारण्यक उपनिषत् के पंचमाध्याय में अन्तर्यामी ब्राह्मण विषे उद्दालक याज्ञवल्क्य का संवाद है तहां याज्ञवल्क्य भगवान् ने एक परमात्मा को अन्तर्यामी रूप से सर्वत्र प्रतिपादन किया है। तथाच{ यःपृथिव्यांतिष्ठन्पृथिव्या अन्तरोयं पृथिवी न वेद यस्य पृथिवी शरीरं

यः पृथिवीमन्तरोयमयत्येषत आत्मान्तर्याम्यमृतः} ।जो पृथिवीके ऊपरहै अरु पृथिवीके अन्तरहै पृथिवी जिसका शरीरहै उसको पृथिवी नहीं जानती सोई पृथिवीके आवांतर अन्तर्यामी अमृत आत्माहै। इसीप्रकार जल अग्नि वायु आकाश सूर्य चंद्रमा बिजली प्रकाश तम आदिक सर्वकेआवान्तर अन्तर्यामी अमृत आत्माहै। इसप्रकार अधिदेवरूपसे प्रतिपादनकरके पुनः अधिभूतरूपसे भी कहाहै। तथाच {यः सर्वेषु भूतेषु तिष्ठन् सर्व्वेभ्यो भूतेभ्योऽन्तरो यꣳ सर्व्वाणि भूतानि न विदुर्यस्य सर्व्वाणि भूतानि शरीरं यः सर्व्वाणि भूतान्यन्तरोयमयत्येषत आत्मान्तर्याम्यमृतः} जो सर्वभूतोंके बाहिर स्थितहै जोसर्वभूतोंके अन्तरहै सर्वभूतजिसके शरीरहैं सर्वभूत जिसकों नहीं जानते सोई सर्वभूतोंके आवान्तर अन्तर्यामी अमृत आत्माहै। हे सौम्य इसही प्रकारअध्यात्मरीत्या भी सर्वान्तर प्रतिपादनकियाहै।तथाच {यः प्राणे तिष्ठन्प्राणादन्तरोयं प्राणो न वेद यस्य प्राणः शरीरं यः प्राणमन्तरो यसयत्येषत आत्मान्तर्याम्यमृतः} इसीप्रकार वाचाके चक्षुके श्रोत्रके त्वचाके मनके बुद्धिके रेतपर्यंत अन्तर्यामी आत्माको श्रुतिने अधिदैव अधिभूत अध्यात्म तीनोप्रकार सं-

पूर्णचराचरके आवान्तर अन्तर्यामीरूपसे एक परमात्मा ही को प्रतिपादन कियाहै। ताते हे सौम्य संपूर्ण चराचरजगत्में एक परमाणुमात्रभी ऐसा नहीं कि जिसके आवान्तर अन्तर्यामीरूपसे चैतन्यपरमात्मानहीं। अरु परमाणुसेलेके ब्रह्मांड पर्यंत जो जो स्थूल सूक्ष्म आकृति परिमेयताहै सो सर्व एक परमात्मासेई भईहै इस आकाशादि सृष्टिके पूर्व एक परमात्मासे इतर कोई भी वस्तुनहीं कि जो स्थूल सूक्ष्म सर्व ब्रह्मांडका उपादान अरु निमित्त कारण मानाजाय। तथाच {आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीत् नान्यत्किञ्चन मिषत्}। ऐतरेय उपनिषत्की प्रथम श्रुति। ताते सर्वब्रह्मांडका उपादान अरु निमित्तकारण एक परमात्माही है। मकड़ीवत्। तथाच {यथोर्णनाभिः सृज्यते गृह्णातेच। तथाऽक्षरात्संभवतीह विश्वम्} मुंडक उ०के प्रथम मुंडककी ७मी श्रुतिमें। जैसे मकड़ी अपने जालेकी रचनामें आपही उपादानकारण मृत्तिकास्थाने अरु आपही निमित्तकारणहै कुलाल किंवाडंडचक्रादिस्थाने। तैसेई सर्वशक्तिमान् परमात्मा चैतन्य २ इस सम्पूर्णजगत्की रचनाविषे एक आपही अभिन्न निमित्तउपादान कारणहै। ताते सम्पूर्ण नामरू-

त्मक जगत् एक परमात्मरूपहीहै तिससे पृथक् सत्ताका अभावहै। जैसे घटविषे मृत्तिकासें इतर घटसत्ताका अभावहै। जैसे सुवर्णसे इतर भूषण सत्ताका अभावहै। जैसे लोहसे इतर शस्त्रादि सत्ताका अभावहै। ताते घट भूषण शस्त्रादिकोंविषे मृत्तिका सुवर्ण लोह ही सत्यहैं तिसविषे कार्य रूप घट भूषण शस्त्रादि केवल वाचारंभणमात्र कल्पित असत्यहै। तथाच{ यथा सोम्यैकेन मृत्पिण्डेन सर्व्वं मृण्मयं विज्ञातं स्याद्वाचारम्भणं विकारो नामधेयं मृत्तिकेत्येव सत्यम् } इत्यादि छांदोग्य उ० के ६ मेंप्रपाठककी ४ थी श्रुतिमें। ताते हे सोम्य इत्यादिप्रकार अनेकश्रुतियोंके प्रमाणसे अव्याकृति से तृणपर्यंत यावत् व्याप्य व्यापकभाव जगत्है तावत् एक परमात्माही है तिससे इतर न व्याप्यहै न व्यापकहै। जैसे मृत्तिकाके घटविषे मृत्तिकाही भरिये तहाँ घट व्याप्यहै मृत्तिका व्यापकहै घट आधारहै मृत्तिका आधेयहै सो अपने २ नाम रूप लक्षण करके पृथक् २ हैं परंतु वास्तवकरके व्याप्य घट अरु व्यापक मृत्तिका इन दोऊका अधिष्ठानपृथिवीविषे अभेदहै। तैसेई शरीरादि व्याप्य अरु अंतर्यामी व्यापक सो अपने २ नाम रूप लक्षण कर

के जड चैतन्य प्रथक् २ है तथापि सर्वाधिष्ठान अचे-
त्यचिन्मात्र परमात्मसत्ताविषे अभेदहै। जैसे स्वप्न
सृष्टिका जड़ चैतन्य व्याप्य व्यापक अाधार अाधेय
कार्य कारण अादि सर्व नाम रूप पृथक् २ प्रतीतहो
तेसंते भी अनुभवसत्ताविषे अभेदहै। तैसे सर्वना-
मरूपात्मक जगत्रूपसे एक परमात्माही सु शो-
भितहै। ताते हे सौम्य समानरीतिसे यावत् नामरू-
पात्मक जगत्है तावत् सर्व एक परमात्माहीहै।
तथाच { सर्वं खल्विदं ब्रह्म } छा०उ० के ३ प्रपाठक
की १४ मीश्रुतिमें। ताते इत्यादि अनेक श्रुतिअोंके
प्रमाणसे संपूर्ण नामरूपात्मक जगत्रूपसे एक अ-
द्वैत परमात्माही सु शोभितहै ताते यावत् सचराचर
जगत्है तावत् सर्व परमात्माके ही अवतारहैं॥
तातेहे सौम्य जो अाचार्य कहतेहैं कि परमात्मा पर
ब्रह्म सर्वसे बड़ाहैं वो छोटीवस्तु देहादि किंवा गर्भ-
स्थानादिकोंविषे नहीं समायसकता ताते उसका
अवतारमानना योग्य नहीं। सो उनके वाक्यको ऊ
परकहेप्रकार श्रुतिप्रमाणसे विचारकरो जो सर्वप्र-
कार सर्वरूपसे सर्वत्र एक परमात्माही सु शोभित
है तिसको नमानके अपनी कल्पनासे नानाप्रकार-
की कल्पनाउठाय ईश्वरअवतारको अप्रमाण कह-

तेहै सो उनका कहना ही उनको नास्तिक सिद्धकरेहै क्यों कि जो परमात्मा परब्रह्म सर्वरूपसे सर्वत्र बाहिर भीतर परिपूर्णहै। तथाच{सबाह्याभ्यंतरोह्यज:} मु० उ० के २ मुंडककी २ श्रुतिमें। उससे प्रथक सत्तावान् एक परमाणुभी नहीं तब समाता नसमाता मानके यहब्रह्महै यहनहींहै ऐसासमझ एक अखंड परिपूर्ण परमात्माको खंड परिच्छिन्नरूपसे जानना अरु कहना यही नास्तिकताहै। अरु सर्वरूपसे सर्वत्र अखंड परिपूर्णपरमात्माको प्रतिपादनकरती श्रुति तिसको प्रकट न करके श्रुतिसे बाह्य अपनी कल्पनाकरनी अरु लोकोंविषे अपनेको वेदमतावलंबी परम आर्य्य सत्यवादी मानना अरु विदितकरना सो केवल नास्तिकता अरु धूर्त्तता ही है। ताते हे सौम्य ऐसे पुरुषोंके वाक्य तुमसरीखे श्रुतिवाक्यानुसार विचारशील आस्तिक पुरुषोंको माननेयोग्यनहीं इसकासूक्ष्मबुद्धिसे विचारकरो। हे सौम्य यहांपर्यंत उन कुतर्कि पुरुषोंके उस कुतर्कवाक्यका कि जो वो कहतेहैं कि परमात्मा परब्रह्म सर्वसे बड़ा होनेसे छोटीवस्तु जो देहादि तिनविषे नहीं समाय सकता ताते उसका अवतार मानना अरु कहना अप्रमाणहै तिसवाक्यका श्रुतिकेप्रमाण अनुभव युक्तिसे संक्षेपमात्र खंड-

नकिया तिसका तुमको भलीप्रकार विचारकरना योग्यहै आगे जो इच्छा ॥

॥ हे सौम्य अब उनपुरुषोंके उसवाक्यका विचार श्रवणकरो जोवो कहतेहैं कि परमेश्वर सर्वशक्तिमान्है वो बिनाई अवतारधारणकिये सर्वकुछकरसकताहै ताने धर्मरक्षणार्थ भी उसका अवतारहोना अरु मानना असंभव अप्रमाणहीहै। अब तिसका उत्तर भी श्रवणकरो ॥

॥ हे सौम्य उनपुरुषोंका जो प्रथमवाक्यहै कि परमेश्वर सर्वसे बडाहोनेसे छोटी वस्तुओंमें नहीसमायसकता ताने परमेश्वरका अवतार मानना योग्यनहीं। सो इसवाक्यसे यह सिद्धभया कि सर्वशक्तिमान् परमेश्वर सर्वशक्तिमान् सर्वसे बडाहोकेभी छोटी वस्तुओंमें समाय अपनेस्वरूपमें ज्योंकात्योंरहे सो शक्ति जोजड अकाशमेंहै सो चैतन्य परमेश्वरमें नहीं जब अपनेसे छोटीवस्तुमें समानेकी शक्ति उसको नहीं तब परमेश्वरको सर्वशक्तिमान् मानना अरु कहना भी योग्य नहीं। ताते जोपुरुष परमेश्वरको सर्वशक्तिमान्भी कहेतेहैं अरु यहभी कहतेहैं कि वो परमेश्वर छोटीवस्तुओंमें नहींसमायसकता सो 'स्ववचनव्याघात' करतेहैं अर्थात्

अपनेकहे वाक्यका आपही खंडन करतेहैं एतदर्थभी उनधूर्त्त पुरुषोंकेवाक्य माननेयोग्यनहीं॥

॥शिष्य॥

॥हे भगवन् वोपुरुष कहतेहै कि सर्वशक्तिमान् परमेश्वरमें अवतारधारणशक्तितोहै परंतु अवतारधारतानहीं ताते अवतारका मानना अप्रमाणहै॥

॥गुरू॥

॥हे सौम्य जो पुरुषऐसा कहतेहैं कि परमेश्वरमें अवतारधारणशक्तिहै परंतु अवतारधारतानहीं सो उनपुरुषोंसे यहप्रश्नकरनाचहिये कि विनाई अवतारधारणकिये परमेश्वरमें अवतारधारणकरनेकी शक्तिका अस्तित्व किसआधारसेमानतेहो। जैसे किसीमनुष्यमें कोईगुणहोताहै सो गुण जब व्यापारद्वारा प्रकटजाननेमें आवताहै तब उसमनुष्यमें उसगुण के अस्तित्वको माननेहै विनाउसगुणके प्रकटजाने उसमनुष्यमें उसगुणका अस्तित्वआरोप व्यर्थहै। तैसेही परमेश्वरका अवतारहोना नमानके परमेश्वरमें अवतारहोनेकी शक्तिकाआरोपव्यर्थहै। ताते उन कुतर्कीपुरुषोंका यहवाक्यभी माननायोग्यनहीं॥

॥हे सौम्य अब परमात्माकी सर्वशक्तिमत्ता जिसप्रकारउसविषे रहतीहै अरु जिसप्रकार प्रकटहोके

जाननेमे आवतीहै सो सर्व संक्षेपमात्र तुम्हारेप्रति कहतेहैं तिसको सावधाननासे श्रवणकरो। हे सौम्य जो सर्वशक्तिमान् परमात्माहै सो निराकार निर्विकार सर्वउपाधिसेरहित अखंड आकाशवत् परिपूर्ण समान एकरस अचेनचिन्मात्र विज्ञानघनहै सो न स्थूलहै न सूक्ष्महै न बडाहै न छोटाहै न श्वेतहै न श्यामहै। तथाच { स होवाचैतद्वै तदक्षरं गार्गि ब्राह्मणा अभिवदन्यस्थूलमनण्वह्रस्वमदीर्घमलोहितमस्नेहमच्छायमतमोऽवाय्वं नाकाशमसङ्गमरसमगन्धमचक्षुष्कमश्रोत्रमवागमनोऽतेजस्कमप्राणममुखममात्रमनन्तरमबाह्यं न तदश्नाति किञ्चन न तदश्नाति कश्चन} । बृ० उ० के ५ अ० के ८ ब्राह्मणकी ८ श्रुतिमें। इसप्रकार सर्व आकारविकार नामरूपादिकसे रहित अस्तिमात्र परमशांततत्वहै तिसकी जो सर्वशक्तिमत्ताहै सो तिसविषे तदवत्ही अभेदरूपसे व्याप्तहै। जैसे काष्ठविषे अग्नि अग्निविषे उष्मता आकाशविषे शून्यता इत्यादि अभेद स्थितहै। तैसेई परमात्माकी सर्वशक्तिमत्ता परमात्माविषे अभेदहै ताते परमात्माकीजो सर्वशक्तिमत्ताहै सो बिना परमात्माके विशेषरूपधारे साक्षात् इदंकरके जाननेमें आवतीनहीं। जैसे सामान्य अग्निविषे जो कि काष्ठादि सर्वविषे व्याप्तहै

दाहकतादि शक्ति सो सामान्यरूपसे ही तिसविषेस्थि
तहै। जब काष्ठादिकोंके मंथनद्वारा अग्नि विशेषरूप
को धारतीहै तब उसकी दाहकता प्रकाशकता आ-
दि शक्ति भी विशेषरूपसे देखने कहनेविषे आव-
तीहै बिना अग्निके विशेषरूपधारे दाहकताआदि
शक्ति प्रकटहोतीनहीं अरु बिना उसके प्रकट भये
अग्निविषे उसशक्तिके अस्तित्वका आरोपबने न-
हीं। हे सौम्य तैसेई निराकार निर्विकार महा सू-
क्ष्म निर्विशेष परमात्माहै तिसकी जो सर्वशक्तिम
त्ताहै सो तिसविषे तारूपसे ही स्थितहै जबवो पर
मात्मा अपनेचैतन्यरूपता करके अपनी इच्छा-
द्वारा अपनेविषे ज्यों२ विशेषरूपको धारताहैत्यों-
त्योंतिसकी जो सर्वशक्तिमत्ताहै सोभी प्रथक्२ जा-
नने अरु कहनेविषे आवतीहै कि यह परमात्मा-
की शक्तिहै बिनापरमात्माके विशेषरूपधारे उ-
सकी शक्ति जाननेमें आवेनहीं। हे सौम्य जैसे कि-
सी मनुष्यमें बहुतसे गुणहोतेहैं उनमेंसे जो२ गु-
ण उसके अवयवद्वारा प्रकटहोतेहैं सोई सो गुण
जाननेमें आवतेहैं तब ही उस मनुष्यमें उन उन
गुणोंके अस्तित्वका निश्चयहोताहै अरु तिसीके
आश्रय उस मनुष्यमें गुणका आरोपहोताहै जो

यह पुरुष इस२ गुणकरके सम्पन्न गुणी है। अरु यावत् वो गुण अवयवों की विशेषताद्वारा प्रकट नहींहोते तावत् वो गुण गुणीके विषे निर्गुणहोके रहतेहैं अरु यावत् वो गुण गुणीके विषे निर्गुणवत् रहतेहैं तावत् उसमनुष्यकी भी निर्गुणसंज्ञारहतीहै ताते उसको गुणीकरके कोई मानतानहीं। हे सौम्य तैसे ही परमात्मा अनन्तशक्तिमान् है तथापि उसको सर्वशक्तिमान् कहना बिनाउसकी शक्तिको प्रकट अनुभवकिये बनेनहीं। अरु उसकी सर्वशक्तिमत्ता बिनाउसके विशेषरूपधारे प्रकटअनुभवहोतीनहीं अरु बिनाउसके प्रकटअनुभवकिये उसका-आरोप परमात्मा विषे बनेनहीं। ताते यावत् परमात्मा अपनेविषे विशेषरूप धारणकरेनहीं तावत् उसकी सर्वशक्तिमत्ता उसविषे भविष्यतवत् रहतीहै तब तिसअवस्थामें परमात्मा विषे सर्वशक्तिमत्ता-का विशेषण भीबनेनहीं अरु वो भविष्यतरूपा सर्वशक्तिमत्ता परमात्माकेविषे स्वभावभूतहोनेसे निर्विशेषरूपसेहीरहतीहै अरु वो भविष्यतरूपा निर्विशेष सर्वशक्तिमत्तामेंसे जो२ शक्ति परमात्माके जिस२ विशेषरूपद्वारा प्रत्यक्ष अनुभवमें आवतीहैं सो विशेषरूपही परमात्माका अवतारहै। अरु जितनी कुछ

जगत्रूप विशेषनाहै तावत् {सर्वंखल्विदंब्रह्म} सर्व परमात्माकाहीस्वरूपहै। तथाच {ॐमित्येकाक्षरंब्रह्मतस्योपव्याख्यानंयद्भूतं भवद्भविष्यदिति सर्वमोंकारएव} मांडुक्यउ०कीप्रथमश्रुतिमें। तथाच {ज्ञप्तिर्मूर्धा चक्षुषी चंद्रसूर्य्यौ दिशःश्रोत्रे वाग्विवृत्ताश्चवेदाः। वायुःप्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां पृथिवी ह्येष सर्वभूतान्तरात्मा} मुंडक उ०के २ मुंडकीश्रुतिमें। ज्ञरूपरमात्माके जिस२ विशेषरूप विषे जो२ शक्तिहै सो सर्व उस परमात्माकी ही है। ताते जेतनाकुछ जगत्रूप विशेष विस्तारहै सो सर्व समानरूपताकरके एक परमात्माके ही ज्ञवयव रूप ज्ञवतारहै। ताते हे सौम्य ज्ञभिप्राय यहहै कि विना जगत्रूप विशेष ज्ञवयवोंके परमात्माकी सर्वशक्तिमत्ता प्रथक्२ रूपसे प्रकटहोतीनहीं। ताते यावत् निर्विशेषपरमात्मा ज्ञपनेविषे विशेषरूपको धार ज्ञपनीशक्ति प्रकटकरेनहीं तावत् परमात्माका सर्वशक्तिसमेत विना विशेषरूपज्ञाधारके ज्ञस्तित्वकहना संभवैनहीं क्यों जब उसकेहोनेविषे कोईभी विशेष चिह्ननहीं तब विना विशेष चिह्नरूपज्ञाधारके उसका ज्ञस्तित्वभी बनैनहीं ज्ञरु जबपरमात्माका ज्ञस्तित्वनहीं तब सर्वशक्तिमान् किसको

मानिये अर्थात् किसीको भी नहीं। नाते हे सौम्य परमात्माके विशेषरूप अरु निसद्वाराउसकी विशेष शक्तिको नमानके जोपुरुष परमात्माका अवतार होना नहीं मानते तिनके मतविषे नास्तिकप्रसंग सिद्धहोताहै ॥

हे सौम्य अब सर्वशक्तिमान् परमात्माका अस्तित्व भाव अरु उसकी सर्वशक्तिमत्ता जगत्रूप अवयवोंकी विशेषताद्वारा प्रतिपादनकरतेहैंअरु उसके वो अवयव कि जिसके द्वारा उसकी सर्वशक्तिमत्ता प्रकटहोतीहै सो सामान्यकरके परमात्माके ई अवतार प्रतिपादन करतेहैं। तहां प्रथमजीवात्माका दृष्टान्त कहतेहैं क्यों जो यह जीवात्मावास्तवमें सर्वउपाधिसेरहित परमात्माहीहै। तथाच {जीवेनात्मनानुप्रविश्य} छां०उ०के ६ प्रपाठककी ३ श्रुतिमें। तथा {स एतमेव सीमानंविदार्य्यैतयाद्वारा प्रापद्यत} ऐतरेय उ०के ३ खंडकी १२ श्रुतिमें। तथा {अयमात्माब्रह्म} मां०उ०की २ श्रुतिमें। तथा {स आत्मातत्त्वमसि} छां०उ०६ प्र०की ८ श्रुतिसे १६ मीश्रुतिपर्यंत। इत्यादि प्रमाणसे नाते अध्यात्म व्यष्टिरूपआत्माके दृष्टान्तसे समष्टिरूप अधिदेव परमात्माकों विचारकरना। हे सौम्य जिसकिसी

को जो शक्ति या गुण प्रकट होताहै सो उसीद्वारा होताहै ज्यौर द्वारा नहीं। जैसे कि जीवात्माकी जो शक्तिहै सोतिसविषे तादात्म्यतासे स्थितहै जब जीवात्मा जाग्रत स्वप्नकी सर्व उपाधिको त्यागदेवे सुषुप्त ज्यवस्थामें सर्व उपाधिसे रहित केवल स्वयंप्रकाश एकरस विज्ञानघन ज्यद्वैत होताहै तिस ज्यवस्थामें उसकी जो शक्तिहै सो भी तिसविषे तादात्म्यभावसे ही रहतीहै। जैसे बीजमें वृक्ष शक्ति बीजरूपसे ही रहतीहै तैसे। ताते जीवात्मा सुषुप्तिज्यवस्थामें ज्यपने निर्विशेषभावको प्राप्त होताहै उस ज्यवस्थामें उसकी शक्ति भी निर्विशेषभावसे हीरहतीहै उस निर्विशेष ज्यवस्थामें निर्विशेष ज्यात्माविषे सर्वशब्दके ज्यर्थके ज्यभावसे सर्वशक्तिमत्ताका विशेषण बनेनहीं क्योंजो विशेषण विशेष्यबिना होतानहीं: जैसे किसी दंडधारीको दंडीविशेषणसे कहतेहैं कि यहपुरुष दंडीहै सोउस पुरुषमें दंडीका विशेषण तबहोताहै जब उसकेपास दंडकी विशेषता होतीहै ज्यरु जो उसकेपास दंडकी विशेषता न होय तो उसमें दंडीका विशेषण भी कहना बनेनहीं। तैसे निर्विशेष सजातीय विजातीय स्वगत भेदसे रहित एक ज्यद्वैत ज्यात्मामें विशेषता कुछ है नहीं एतदर्थ उसविषे सर्वशब्दकी प्रवृत्ति नहीं इसीसे निर्विशेष ज्यात्माविषे

सर्वशक्तिमत्ताका विशेषण बनेनहीं। परंतु उस निर्वि
शेष ग्रात्माविषे जो निर्विशेष्यतासे ही सर्वशक्तिमत्ता
है तिसका नास्तित्वभाव नहीं क्यों जो ग्रात्मा ग्रविना
शी है ताते उसकी सर्वशक्तिमत्ता भी ग्रविनाशी है त-
थापि वो सर्वशक्तिमत्ता ग्रपनी विशेष्यताके ग्रभाव
से निर्विशेष्य ग्रात्माविषे विशेषणका हेतु नहीं। ग्रर
इसीहेतुसे सुषुप्ति ग्रवस्थामें निर्विशेष्य ग्रात्माविषे द-
र्शन श्रवण ग्रादि शक्ति होतेसंते भी दृश्य शब्दादिकों
के ग्रभावसे दृष्टा श्रोता ग्रादि विशेषण से कहनावने
नहीं। तथाच {य ह्येतन्न पश्यति पश्यन्ये तन्न पश्यति
न हि द्रष्टुर्दृष्टे र्विपरिलोपो विद्यते ग्रविनाशित्वान्न तु
तद्द्वितीयमस्ति ततोऽन्यद्विभक्तं यत्पश्येत्} इत्यादि बृ-
हदारण्य उ० के ग्र०४ के तृतीय ब्रा० की २३ मी श्रुति से ३०
मी श्रुति पर्यन्त। ग्रर जब जीवात्मा जाग्रत स्वप्न स्थूल
सूक्ष्म रूप विशेष उपाधि में ग्रावताहै तब तिन उपाधि
युक्त विशेष ग्रवस्थामें ग्रात्माकी सर्वशक्तिमत्ता देख-
ने सुननेमें ग्रावतीहै तब तिस ग्रवस्थामें दृष्टा श्रोता
मंता विज्ञाता ग्रादि विशेषण कहेजातेहैं। तथाच
{नान्यदतोऽस्ति द्रष्टृ नान्यदतोऽस्ति श्रोतृ नान्यदतोऽस्ति
मन्तृ नान्यदेतोऽस्ति विज्ञातृ} इत्यादि बृ० उ० के ग्र०५
मेंके ८ मेंब्रा० की १० भी श्रुतिमें। ताते हे सौम्य जीवा-

ताकी जो शक्ति है सो ग्रवयव रूपी विशेषताहारा प्रकट होतीहै सो भी तब होतीहै जब जीवात्मा उन ग्रवयवोंमें प्रवेशकर ग्रपनी शक्तिको प्रकट करताहै बुद्धिमें निश्चयग्रादि विज्ञातशक्ति प्राणमें क्रियाशक्ति नेत्रमें दर्शनशक्ति श्रोत्रमें श्रवणशक्ति इत्यादि जो शक्तिहै सो सर्व ग्रात्माकी हैं बिना चैतन्य जीवात्माके शरीरविषे सर्व ग्रवयवहोतसंते भी कोई शक्ति नहीं। ग्ररु जब जीवात्मा ग्रवयवरूप सर्व उपाधिको छोड सुषुप्त ग्रवस्थामें साक्षी ग्रात्मासाथ निर्विशेषहोताहै तब ग्रवयवोंमें कोई भी शक्ति देखनेमें ग्रावतीनहीं ताते सर्व ग्रवयवोंमें सर्व शक्ति जीवात्माकीहै परंतु जब जीवात्मा निर्विशेष भावको प्राप्तहोताहै तब सर्वविशेषता के ग्रभावसे ग्रात्माविषे सर्व शक्तिहोतसंते भी वो विशेषण कहनेका हेतु नहीं। ग्ररु निर्विशेष ग्रात्माका जो मन इन्द्रिय ग्रादि ग्रवयवोंसाथ मिलके द्रष्टा ग्रादि विशेष्य भावको प्राप्तहोताहै सोई उसका ग्रवतारहोताहै ग्ररु तबही प्रथक्२ नाम गुणसेकहाजाताहै बुद्धिसाथमिलके बोद्धा मनसाथमिलके मंता दृष्टिसाथमिलके द्रष्टा श्रोत्रसाथमिलके श्रोता वाणीसाथमिलके वक्ता ग्रादिकहोजाताहै। तथाच { परेदेवेमनस्येकीभवति तेन तर्हीं पुरुषो न पश्यति न

जिघ्रति न रसयते तत्स्पृशते ग्रामेवदते नान्नं नान्न्दयते नविसृजते नेयायते स्वपतीत्याचक्षते ॥ एष हि दृष्टा स्पृष्टा श्रोता घ्राता रसयिता मंता बोद्धा कर्ता विज्ञानात्मा पुरुषः } इत्यादि पञ्चम उपनिषद के ४ पुरुष की २ तथा ८ मी श्रुति में । हे सौम्य सुषुप्तिवत् सर्व विशेषतासे रहित निर्विशेष आत्माहै जिसका निर्विशेषभावसे उत्थानहोय अवयवोंसाथमिल विशेषरूप धारके जाग्रतस्वप्न रूप जगत्विषे आवनाहै सोई आत्माका अवतारहोनाहै क्यों जो अवतारनाम उतरनेकाहै । नाते आत्माका जो निर्विशेषभावमें उतर अवयवोंसाथमिल विशेषरूपहोनाहै सोई आत्माका अवतारहै अरु सोई सगुण साकारहोनाहै परंतु सो नित्य अवतारहै । अरु आत्माका जो इच्छापूर्वक कर्मकरके परलोकमें फल भोगार्थ शरीर धारणकरनाहै सो नैमित्तिक अवतारहै नहां नैमित्तिक अवतारोंमें नित्य अवतारका भावहै अरु नित्य अवतार में नैमित्तिकअवतारका अभावहै परंतु जीवात्मा नित्य नैमित्तिक भाव अभावसे रहित नित्य नैमित्तिक उभय अवतारोंमें सर्वउपाधिसे रहितसमानहै । हे सौम्य ऐसा जे सर्व उपाधिसे रहित सुषुप्तवत् निर्विशेष निराकार निर्विकार निर्गुण समान

एकरस आत्म तत्व हैं तिसकी जो दृश्यात्मक श्रवणात्मक बोधात्मक निर्विशेष शक्ति है सो नित्यनैमित्तिक स्थूल सूक्ष्म देहेन्द्रिय मनादिक रूप विशेषता साथ मिल के प्रकट होती हैं अरु जब प्रकट होती हैं तब ही जानने कहने विषे आवती हैं अरु जो आत्मा अपने निर्विशेष भाव से इन्द्रिय आदि विशेष के साथ विशेष भाव को प्राप्त न होय तो उसकी कोई भी शक्ति जानने में आवे नहीं अरु जब उस की कोई भी शक्ति जानने में आवे नहीं तब उसके अस्तित्वका निश्चय भी आवे नहीं तब उसके निश्चय के अभाव से नास्तिक प्रसंग सिद्ध होता है। हे सौम्य एतदर्थ ही आत्म वेत्ता विद्वान् प्रथम अपने आप आत्मा को स्थूल सूक्ष्म अवयवों की विशेषता द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव करते हैं। तथाच। "यः प्राणेन प्राणिति स त आत्मा सर्वान्तरो योऽपानेनापानिति स त आत्मा सर्वान्तरः" इत्यादि बृ० उ० के अ० ५ के ब्रा० ४ में। नाते। "नान्यदतोऽस्ति द्रष्टा नान्यदतोऽस्ति श्रोतृ" इत्यादि बृ० उ० के अ० ५ ब्रा० ८ में। जो प्राण हो के प्राण का कार्य करता है जो अपान होके अपान का कार्य करता है सोई सर्वान्तर आत्मा है नाते आत्मा से अन्य द्रष्टा नहीं श्रोता मंता आदि कोई नहीं आ-

त्मा ही द्रष्टा श्रोता मंता बोद्धा आदि हैं ताते मन बुद्धि इन्द्रिय आदि स्थूल सूक्ष्म संघात विषे जो दृष्टृत्व श्रोतृत्व मन्तृत्व ज्ञातृत्वादि शक्ति हैं सो सर्व आत्मा की हैं आत्मा से व्यतिरिक्त इस स्थूल सूक्ष्म विशिष्ट विषे शक्तिमान् कोई नहीं। हे सौम्य इस प्रकार मन बुद्धि देहेन्द्रियों की स्थूल सूक्ष्म विशेषता द्वारा निर्विशेष शक्तिमान् आत्मा को श्रुति के वाक्य प्रमाण से। तथाच "धातुः प्रसादान्महिमानमात्मनः" क० उ० की २ वल्ली की २० श्रुति में। साक्षात् अनुभव करके पुनः देहेन्द्रिय मन बुद्ध्यादि स्थूल सूक्ष्म मूर्त्त मूर्त्त सर्व विशेष्यता कों 'नेति नेति' श्रुति के वाक्य द्वारा गिराय के सुषुप्तवत् सर्व विशेषता से रहित निर्विशेष शक्तिमान् आत्मा कों अपने आप आत्मत्व से अनुभव करताहैं सोई आत्म ज्ञान है अरु तिस आत्म ज्ञान से वृत्ति का वृत्तित्व के अभाव सेतादात्म्य अभेद अध्यास द्वारा व्यविधान से रहित ब्रह्माकार होना है सोई साक्षात् मोक्ष का स्वरूप है सो आत्म ज्ञान द्वारा ही होता है अर्थात् ब्रह्मात्मा के अभेद ज्ञान द्वारा ही होता है। तथाच "नान्यः पंथा विमुक्तये" केवल्य उपनिषद विषे। और मार्ग मोक्ष का कोई नहीं। ताते हे सौम्य परमात्मा कों सर्वशक्तिमान् अरु सामान्य अवतार रूप होने के।

विषे में तुम को जीवात्मा का दृष्टान्त कहा है सो अध्यात्मरीत्या दृष्टान्त भूत परमात्मा कों ही कहा है। क्यों जो परमात्मा से इतर आत्मा नहीं अरु आत्मा से इतर परमात्मा नहीं। तथाच "तत्त्वमेवत्वमेवतत्" केवल्य उपनिषद् विषे ताते उपाधि निरुपाधि के भेद से आत्मा परमात्मा का भेद कल्पित है वास्तव में निरुपाधि समान चैतन्य सत्ता विषे भेद नहीं। अरु आत्मा परमात्मा का अभेद ज्ञान ही मोक्ष का साधन है और नहीं अरु जो कोई पुरुष आत्मा परमात्मा विषे भेद द्वैत भाव मानते हैं तिनका जन्म मरण कदापि नहीं छूटता। तथाच "यदेवेहतदमुत्रयदमुत्रतदन्विहमृत्योःसमृत्युमाप्नोतिइहनानेव पश्यति" इत्यादि क० उ० की ४ वल्ली की १० श्रुति में। परंतु हे सौम्य तुम्हारे बोध के लिये अब दृष्टान्त भूत अधिदैव परमात्मा कों कहते हैं तिसको भी अवधारण करो कि जिस प्रकार उसकी सर्व शक्ति मत्ता का अरु उसके अवतार होने का तुम कों निःसंदेह निश्चय होय।

हे सौम्य जिस प्रकार तुम कों जीवात्मा का दृष्टान्त कहा है तैसे ही सर्व विशेषता से रहित निराकार निर्विकार निरवयव निर्विशेष समान एक रस अखंड परिपूर्ण महा सूक्ष्म अचेत्य चिन्मात्र परम

तत्व परमात्मा है तिसकी जो सर्व शक्तिमत्ता है सोभी तिस विषे तद्वत् ही स्थित है (बीज में वृक्ष सत्ता वत्) तिस अपनी निर्विशेष शक्ति को विशेषता से अनुभव करने के अर्थ अपने निर्विशेष स्वरूप में विशेष रूप धारने की इच्छाकर (मनो राज्य वत्) विशेष रूप धारना भया। जैसे चक्रवर्ती राजा अपनी साहसता शूरता लाघवता आदि शक्ति जो स्वभाव रूप अभेद हैं तिसको प्रकट अनुभव करने के अर्थ मृगया की इच्छाकर मंत्री सेना वाहनादि सामग्री लेवन में प्रवेश कर अपनी सर्व शक्ति कों अनुभव करता है॥

हे सोम्य तैसे ही अखंड परिपूर्ण महा सूक्ष्मकेवल विज्ञान घन शिला कोशवत् भेद रहित अद्वैत परमात्म तत्व है कि जिस से दूतर एक परमाणु मात्र भी नहीं सो अपनी आप अभेद निर्विशेष शक्ति को देखता भया। तथाच "आत्मा वा इदमेक एवाग्र आसीन्नान्य त्किञ्चन मिषत्" इत्यादि स० उ० कि आदिमें। अरु विचार करता भया जो अब अपनी निर्विशेष शक्ति मत्ता कों विशेषता से अनुभव करना चाहिये ऐसा विचारके इच्छा करता भया। तथाच "तदैक्षत बहु स्यां प्रजायेयेति" छा० उ० के ई प्रपाठक की श्रुति में जो मैं एक हौं सो बहुत रूप हो वों-

हे सौम्य संपूर्ण नामरूपात्मक जगत्के पूर्वका जो अचेत्य चिन्मात्र महासूक्ष्म सर्व कलंकसे रहित परम शुद्ध परिपूर्णस्वस्फुर आत्मतत्वहै तिसका चैतन्यरूपताकरके जो चेतनाके सन्मुखहोनाहै तिसकोंचेतनोन्मुखत्व कहतेहैं सो कैसाहै जैसेबीजगत वृक्षसत्ताका अंकुरसंज्ञाकों न पायके अंकुरत्वके सन्मुखहोनाहै तैसे सो चेतनोन्मुखत्व चेतनाभावकों अंकुरवत् प्राप्त होतीभई सोई त्रिगुणकी साम्यतारूप आदिशक्तिहै तिसहीको आदिमायाभी कहतेहैं। तथाच {चेतनेत्यभिधीयते} सप्तशति अ०५के १३ श्लोकमें तिनके साथमिला जो चैतन्यहै तिसको सबल ईश्वर आदिजीव इत्यादि नामसे कहतेहैं। अरु सो चेतनारूप आदिशक्ति परमात्माको उसकी सर्व शक्तिमत्ताकी लीला प्रकट अनुभवकरावनेके अर्थे आप परमात्माकी सत्तापाय एकोहं बहुस्याम इस स्फुरणारूपसे विशेष होतीभई अंकुरसेपत्रवत् तिस आदिइच्छामें इच्छाशक्ति क्रियाशक्तिज्ञानशक्ति का मुख्यतासे ओत प्रोतहै अंकुरमेंपत्रवत् सो एकोहंबहुस्याम इसप्रकरणके एकः अहम् बहुस्याम् तीनोपदोंके साथ पृथक २ गुणविभागयुक्त विशेषहोती भई तहांएकःएक ऐसी जो स्फुरणासो सत्व

प्रधान ज्ञानशक्ति अनावर्ण अरु अहं ऐसा जोस्फु-
रण सो रजप्रधान इच्छाशक्ति सविक्षेप अरु बहु
स्याम् तमप्रधान क्रियाशक्ति सावर्ण । हे सौम्य इ-
सप्रकार शुद्ध निर्विशेष परमात्माकी निर्विशेषशक्ति
सो स्फुरणरूप विशेषभावसे अंकुरके तीनपत्रवत्
सुशोभितहोतीभई परंतु परमात्मसत्तासे इतरनहीं
केवल एक समझावनेमात्र अध्यारोपसे कहाहै । तब
इस त्रिगुणात्मक इच्छाशक्तिने परमात्माकी सत्ताया-
य इस प्रपंचरूपवनको खडाकर तिसविषे परमात्मा
को लीलादेखावनेकेअर्थ जीवरूप बुरका पहिराय।
प्रवेशकरायाहै । तहां प्रथम इच्छारूपमायाने अपं-
चीकृत पंच महाभूत अरु अहंकार महत्तत्व इन ।
साततत्वोंका अधिदैवविराटरूपी भूमंडलकिया।
फेर तिसविषे पंचीकृत पंचमहाभूतात्मक स्थूल प्र-
पंच अधिभूतविराटरूपी वनकिया तिसविषे पंच-
विषयात्मक नामरूप नानाप्रकारके मृगादिजीवकि
ये अरु चतुर्दशभुवनरूपी लीला देखनेको स्थानकि
ये कि जहाँ परमात्मा जीवरूपबुरका पहिरके लीला
देखे।अरु अध्यात्मविराट्देहरूप हाथीकिया । हे-
सौम्य इसप्रकार परमात्माकी इच्छारूपीमायाने ली-
लाकी सामग्री प्रपंचरूपवनको खडाकर परमात्मा-

को देखाया अरु कहा कि अब हमारे साथ देहरू-
यहाथीपर आरूढ़होय प्रपंचरूपी वनविषे प्रवेशक
रके इस अपनी लीला कों देखिये अरु अपनीसर्व
शक्तिमत्ताको अनुभवकरिये कि जो आपकीइच्छा
है। हे सौम्य इसप्रकार परमात्माकी स्फुरणारूप
मायाने परमात्मासों कहके पुनःउसमहाराजाको
मनुष्यशरीररूपी हाथीके मस्तकरूप हौदापर आ-
रूढ़किया अरु सर्वकाप्रेरक अन्तर्यामीकों उसका
मंत्रीकिया अरु चिदाभासकों सर्वका नायकसेना
पतिकिया नाना इंद्रियां अरु नानावृत्तिरूपी सेना
किया अरु नानाप्रकारकी वासना कामना तृष्णा
कादिकोंकों खान पान आदि विषयरूपी मृगक-
सावनेकी सामग्रीकिया। हे सौम्य इसप्रकार परमा-
त्माकी इच्छारूपी मायाने सर्वसामग्री सहितपरमात्मा
कोराजामहाराजवतप्रपंचरूप वनविषे मृगया लीलाद्वारा।
उसकी सर्वशक्तिमत्ताका अनुभवक ने केअर्थ
आप उसके प्रधानवत् अग्रसरहोय प्रवेशकरावती
भई परंतु परमात्मासे इतर कुछनहीं नाते अभिप्रा-
य यहहै कि जैसे राजा अपनी साहता आदिशक्तिको
प्रत्यक्ष अनुभवकरनेके अर्थ मृगयाकेनिमित्तसे व-
नमें प्रवेशकरेहैं मांसादिकोंके लोभार्थनहीं तैसे से-

ही निराकार निर्विकार परमात्माने अपनीसर्वज्ञकि-मत्ताकों प्रत्यक्ष अनुभवकरनेके अर्थ अपनी इच्छा रूपमायकेसाथमिलके इस प्रपंचरूपी बनविषे प्रवेश कियाहै और कामनाकोईनहीं॥

॥ हे सौम्य अब इसको औरप्रकारभी वृद्धोंकी साक्षीपूर्वक श्रवणकरो छांदोग्य उपनिषद् के षष्ठम अध्यायविषे उद्दालकमुनिने अपने श्वेतकेतुनामा पुत्रको विद्याका अहंकारीजानके उसके अहंकारको गिरावनेके अर्थ प्रश्नकियाहै। तथाच {श्वेतकेतोय-न्नु सौम्येदꣳ महामनाऽअनूचानमानी स्तब्धोऽसुत तमादेशमप्राक्ष्यो येनाश्रुतꣳ श्रुतं भवत्यमतं मतम-विज्ञातं विज्ञातमिति} छां०उ०के ६प्र०की १ श्रुतिमें। कि हे श्वेतकेतो हय जो तै अहंकारकर अपनेकों वि-द्याविषे बड़ामानके किसी जे ष्ठ श्रेष्ठके आगे नमता नहीं सो मैं जानताहुं जो तै बड़ाविद्वानहै परंतु वो वि-द्या कि जिसएकविद्याके श्रवणकरनेसे सर्व अश्रुतप-दार्थभी श्रुत होताहै जिसएकके मन कोसर्वकामनन होताहै जिस एकके जाननेसे सर्वजानाजाताहै तिस विद्याको तैं जानताहै या नहीं। हे सौम्य इसप्रकार जब उद्दालकमुनिने अपने पुत्रसों प्रश्नकियातब श्वेतकेतुसे प्रश्नकिया कि{कथंनु भगवःस आदेशो

भवतीति हे भगवन् वो कौनविद्याहै सो ग्राप क-
हिये तब पितानेकहा {यथासोम्येकेन मृत्पिण्डेन-
सर्व्वंमृण्मयं विज्ञातंस्याद्वाचारम्भणं विकारो नाम-
धेयं मृत्तिकेत्येवसत्यम्} इत्यादि। हे सौम्य जैसे ए-
क कारणभूत मृत्पिंडके जाननेसे सर्व मृण्मय का-
र्यभूत जानाजाताहै तिस कार्यभूत घट सरावादिकों-
विषे नामरूप वाचारंभणमात्रही है मृत्तिकासेइतर
घटादिकोंकी पृथक्सत्ताका ग्रभावहै ताते घटादि
कार्यविषे एक मृत्तिकाही सत्यहै। हे सौम्य इत्यादि
प्रकारसे यह सम्पूर्ण नामरूपात्मक जगत् ग्रपनेहो-
नेमें पूर्व एक सत्तही था घटादिकोंसे पूर्व मृत्तिकावत्
सो कैसाथा एक ग्रद्वैतथा। तथाच {सदेव सोम्येद-
मग्र ग्रासीदेकमेवाऽद्वितीयम्} छां० उ० के ६ प्र० के
द्वितीय खंडकी प्रथमश्रुतिमें। ग्रर्थात् सजातीय वि
जातीय स्वगत भेदसे रहित एकसंख्यातीतग्रद्वैतस
त्तही था {तदैक्षत बहु स्यां प्रजायेयेति} सो सत् ग्र-
पनी लीला देखनेके ग्रर्थ इच्छाकरताभया जो
मैं बहुतरूपंहोऊँ तिस इच्छाद्वारा {तत्तेजोऽसृजत}
एक तेजका स्वरूप ग्रपनेविषे सृजताभया जिसको
लोकादि ग्रग्नि भी कहतेहैं तिसविषे "जीवेनात्म-
नाऽनुप्रविश्य" जीवरूपसे ग्रर्थात् प्रतिबिम्ब रूप

से प्रवेशकर ज्ञपने प्रथमके बहुस्याम् संकल्पऊपर पुनः {तत्तेजऐक्षत बहुस्यां प्रजायेयेति} तिस तेज तत्वद्वारा इच्छाकरताभया जो मैं बहुतरूपहोवों तब उस इच्छाद्वारा {तदपोऽसृजत} ज्ञपनेविषे जल तत्वकास्वरूप सृजताभया तिसविषे जीवरूपसे प्रवेशकरके पुनः {ताज्ञपाप ऐक्षन्न बह्व्यः स्याम प्रजायेमहीति} जलतत्वद्वारा इच्छाकरताभयाजोमैंबहुतरूपहोवों तब {ताज्ञपन्नमसृजत} तिस इच्छाद्वारा ज्ञपनेविषे ज्ञपन्नका ज्ञर्थात् सर्वज्ञपन्नकी समष्टिरूप पृथिवीकों सृजताभया तिसविषे जीवरूपसे प्रवेशकरके पृथिवीतत्वद्वारा पुनः इच्छाकरताभया तिस इच्छाद्वारा {तदध्यन्नाद्यंजायंते} व्रीहि यवादि व्यष्टि ज्ञपन्नरूप ज्ञपनेविषे सृजताभया तिस ज्ञपन्न द्वारा पुनः {तेषांखल्वेषां भूतानां त्रीण्येव वीजानि भवन्त्याण्डजं जीवज्जमुद्भिज्जमिति} सम्पूर्णचराचर प्राणिमात्र जो ज्ञण्डज जरायुज उद्भिज तीनप्रकारसे किंवा स्वेदजयुक्त चारप्रकारसे पूर्णहैं तिसका स्वरूप ज्ञपनेविषे सृजताभया । इन सर्व श्रुतियोंका विशेषार्थ इसग्रंथकारकेकिये मुमुक्षुमनोरंजनी नामाग्रंथ जो छां० उ० के ६ प्र० की भाषाटीकाहैतिस मेंहै यहांके वल सूचनामात्र ज्ञर्थलिखाहै ॥

॥हेसौम्य इसप्रकार परमात्मा अपनी सर्वशक्तिमत्तारूपीलीलाकों देखनेके अर्थ अपनी इच्छासें अपनेईविषे अग्निआदि किंवा आकाशादि तृणपर्यंत स्थूलसूक्ष्म विशेषरूपकों धारताभया अरु तिसविषे आपही जीवरूपसे प्रवेशकरताभया। तथाच{अनेनजीवेनात्मनानुप्रविश्य} छां०उ०के ६प्रपाठककी३ श्रुतिमें। तथा{तत्सृष्ट्वातदेवानुप्राविषत्} तैत्तिरीयउ०की ब्रह्मानंदवल्लीके ६अनुवाकमें। तथा{सएतमेवसीमानंविदार्य्यैतयाद्वारा प्रापद्यत} ऐतरेयउ० के ३खंडकी १२श्रुतिमें। अर्थात् वो परमात्मा अग्निआदि किंवा आकाशादिभूतोंकों सृजके तिसविषे प्रवेशकर उनके त्रिधाकर्ण किंवा पंचीकर्णद्वारा नामरूपात्मक संपूर्णजगत्कों सृजके तिसविषे चैतन्य आत्मारूपसे आपही प्रवेशकरताभया तिसप्रवेशद्वारा सर्वका प्रकाशक प्रेरक साक्षीहोय संपूर्ण नामरूपक्रियात्मकलीलाद्वारा अपनी सर्वशक्तिमत्ताकों विशेषरूपसे पृथक२ आपही अनुभवकरताभया। जैसे कि परमात्माने प्रथम आकाशतत्वकास्वरूप अपनेविषे धारणकिया तिसविषे आईजे अपनीही पूर्णता निर्विकारता निर्लेपता अवकाशना आदिशक्ति तिसकों सर्वात्मसाक्षीरूपसे आपही अनुभवकरता

भया। तैसेही आकाशतत्वद्वारा वायुतत्वकास्वरूप अपनेविषे धारणकर तिसविषे आईजे अपनी स्पंदता निस्पंदता सूत्रत्वता भ्रमणता आदिशक्ति तिसकों सर्वात्मसाक्षीरूपसे आपही अनुभवकरता भया। तैसेही पुनः वायुतत्वद्वारा अग्नितत्वकास्वरूप अपनेविषे धारणकर तिसविषे आईजे अपनी ही दाहकता प्रकाशकता पाचकता अरु कांष्ठादिकोंमें सामान्यरूपसे रहके तिसकों भस्मनकरना अरु तिनके मंथनद्वारा विशेषरूपसे प्रकटहोय आधारभूतकाष्ठकों भस्मकर अपने समानस्वरूपकोंप्राप्तहोना इत्यादिशक्ति तिसकों सर्वात्मसाक्षीरूपसे आपही अनुभवकरता भया। तैसेही अग्नितत्वद्वारा जलतत्वकास्वरूप अपनेविषे धारणकर तिसविषे आईजे अपनीही शीतलता द्रवता प्रवाहता आदिशक्ति तिसकों सर्वात्मसाक्षीरूपसे आपही अनुभवकरता भया। तैसेही जलतत्वद्वारा पृथिवीतत्वकास्वरूप अपनेविषे धारणकर तिसविषे आईजे अपनीही कठोरता निश्चलता अन्नोत्पादिता स्थूलता धारणता आदिशक्ति तिसको सर्वात्म साक्षी रूपसे आपही अनुभव करता भया। तिस अन्नकी समष्टिता रूप पृथिवी अपने विषे व्रीहियवादिव्यष्टिअन्नका स्वरूप अपने विषे धार तिस द्वारा अपनी पूर्वकी बहुस्याम इच्छा

येयेति इसइच्छाद्वारा ग्रपनेविषे देवताग्रादि तृणपर्यंत चारखानिरूपासृष्टिका विशेषरूप धारणकर निसविषे ग्रात्मरूपसे प्रवेशकर ग्रपनी प्रथमकी ज्ञानशक्ति इच्छाशक्ति क्रियाशक्ति ग्रादिकी मुख्य विशेषतासे संपूर्ण ग्रपनी नामरूपक्रियात्मकलीलाकोंदेखताभया ग्रपर निसलीलाद्वारा ग्रपनी स्थूल सूक्ष्म सामान्य विशेष प्रकट ग्रप्रकट ग्रादि सर्वशक्तिमत्ताकों ग्रनुभवकरता भया ॥ तातें हेसौम्य इत्यादिप्रकारसे जिस २ विषे जो शक्तिहैं सो सर्व परमात्माकीहीहैं ग्रपर जो वस्तु कि जिसविषे शक्तिहै सो भी परमात्माहीहै ग्रपर निसविषे ग्राप्ही चैतन्यरूपसे प्रवेशकर सर्वका ग्रनुभवकरताहै। ताते ग्रभिप्राययहहै कि जो शक्तिहैसो ग्रपर जिसविषे शक्तिहै सो ग्रपर निसकाजो ग्रनुभवीहै सो सर्व परमात्माहीहै उससे इतर इस स्थूल सूक्ष्म जड़ चैतन्य संपूर्ण प्रपंचविषे एक परमाणुमात्रभीनहीं क्योंजो सृष्टिके पूर्व एक ग्रद्वैत परमात्माहीथा ग्रौर कुछभी न था सो कैसा था जो परिपूर्णथा उसके ग्रस्तित्वविना खालीजगहभी न थी कि जो ग्राकाशादिसर्वसृष्टिके स्थित्यर्थ ग्रवकाशरूप मानीजाय ग्रपर उसपरमात्मासे इतर उपादानभी न था कि जिसकरके घटवत् सृष्टिरचीजाय ग्रपर उससे इतर निमित्तकारणभी न था कि जो सृष्टिरचनामें

इंडचक्रादिवत् निमित्तसामग्री मानीजाय। ताते हे सौम्य इस संपूर्ण प्रपंचका अधार उपादान निमित्त आदि सर्व परमात्माहीहै। जैसे स्वप्नसृष्टिका आधार उपादान निमित्त सर्व अनुभवहीहै अनुभवसे इतर स्वप्नसृष्टि नहीं तैसे ही परमात्मासे इतर यहजगत् नहीं। तथाच {सर्व्वं खल्विदंब्रह्म, चिद्विदंसर्व्वं, सद्विदंसर्व्वं, पुरुष एवेदंसर्व्वं ब्रह्मैवेदंविश्वमिदंवरिष्ठं, ओंकारएवेदंसर्व्वं, यद्भूतंभवद्भविष्यदिति सर्वमोंकारएव यच्चान्यत्त्रिकालातीतं तदप्योंकारएवसर्व्वम्} इत्यादि अनेकश्रुतियोंके प्रमाण करके संपूर्ण नामरूपात्मकजगत्रूपसे अपनेआपविषे अभेदनासे एक परमात्माही सुशोभितहै। ताते हे सौम्य संपूर्णचराचरजगत् परमात्माका अवताररूप हीहै। अरु विना परमात्माकेविशेषरूपधारणकिये उसकी सर्वशक्तिमत्ता प्रत्यक्षअनुभवहोनेकी नहीं क्यों जो परमात्मा महासूक्ष्म निर्विशेषहै ताते वाणी आदिकोंका विषयनहीं तिसविषे जे ब्रह्म आत्मा परमात्मा परमेश्वर आदिक नाम कहनेहैं सो सर्व ऋषि मुनि आचार्योंने उपदेशार्थ लाक्षणिक कल्पना किया है वास्तवमें उसविषे पृथक्करके नामलेनेवालेसहित नामरूपादिकोंका अभावहै एतदर्थ परमात्मा मनवाणी आदिकोंका विषयनहोनेसे श्रुतिने 'नेतिनेति, हारा ना

मरूपादि जो उससे पृथक्करके भासनेहै तिसकीपृथकसत्ताकों गिराय सर्वकी अवधि सर्वाधिष्ठान अस्तिमात्रलक्षकराया है। तथाच { नैव वाचा न मनसा प्राप्तुं शक्यो न चक्षुषा। अस्तीति ब्रुवतोऽन्यत्र कथं तदुपलभ्यते} कठवल्लीउ०की ६ वल्लीकी १२मी श्रुति। तिस परमात्माकेविषे सर्वशब्दकेअर्थकाअभावहोनेसे सर्वशक्तिमत्ताका विशेषण बनेनहीं क्यों जो विशेष्यके अभावसे विशेषणकहनासो असत्यहै। हे सौम्य एतदर्थ जब परमात्मा अपनी इच्छासे सर्वशब्दकाअर्थ विशेषसमुदायजे नामरूपात्मक जगत्है तिसको धारणकरके अपनी सर्वशक्तिमत्ताको प्रकटकरेहै तिसको जब श्रुतियोंके प्रमाणपूर्वक स्वीकारकरें तब उसविषे सर्वशब्दकेअर्थकोलेके सर्वशक्तिमत्ताका विशेषण कहनायथार्थहै। अरु परमात्माकेविषे बिना सर्वशब्दकाअर्थ जे विशेषता तिसको स्वीकारकिये निर्विशेषपरमात्माकेविषे सर्वशक्तिमत्ताका विशेषणकहना बनेनहीं। ताते हे सौम्य जे कोईपुरुष परमात्माकेविषे सर्वशब्दकाअर्थजे विशेषसमुदाय तिसका अभावमानतेहैं अर्थात् कहतेहैं कि परमात्मासर्वरूपनहीं वो सर्वके अभावसे निर्विशेषहीहै सो सर्वशक्तिमानहै सो उनपुरुषोंका ऐसाकहेना प्रमाणकरनेयोग्यनहीं ॥

॥हे सौम्य परमात्माने पूर्वसे जिसप्रकार अपनी नीति शक्तिको स्थापितकियाहै सो तैसेही होताहै अन्यथा कदापिनहींहोता जो पृथक् २ विशेषरूपकेधारणकिये विना अपनी विशेषशक्तिका प्रकटहोनानहीं सो तैसेही होताहै। हे सौम्य परमात्मा सर्वशक्तिमान्होतसंते भी अपनी नीतिको उल्लंघनकरतानहीं ताते धर्मरक्षक जोपरमात्माकी शक्तिहै सो उसके अवतारशरीरों द्वाराही प्रकटहोतीहै अन्यथानहीं ताते जे कोईपुरुष कहनेहैं कि परमात्मा सर्वशक्तिमान्है वो विनाही अवतार धारणकिये सर्वकुछ करनेको समर्थहै सोपुरुष परमात्माकी आदि नीतिको विचारे विना बोलतेहैं क्यों जो परमात्मा सर्वशक्तिमान् सर्वकार्यमेंसमर्थहै तथापि स्त्री पुरुषके निमित्तविना प्रजोत्पादनकरतानहीं अरु अन्नजलके निमित्तविना प्रजापालन करतानहीं। अरु रोगादिकोंके निमित्तविना प्रजाका अभावकरतानहीं। ताते हे सौम्य इत्यादिप्रकारसे जो २ कुछ परमात्मा करताहै सो २ सर्व निमित्तकी विशेषताद्वाराही करताहै यह उसकी आदिनीतिहै ताते परमात्मा जो धर्मरक्षण करेहै सो भी अवतारशरीरोंकी निमित्ततासे ही करेहै। एतदर्थ अभिप्राय यहहै कि सर्वशक्तिमान् परमात्माने आदि यही नीति स्थापितकियाहै जो अपनी निर्विशे-

षशक्तिको अपनेविषे विशेषरूपधारणकरकेही अनुभवकरें सो तैसेहीहोताहै अन्यथा नहींहोता ताते परमात्माकोजो धर्मपालनात्मकशक्तिहै सो अवतारशरीरोंद्वारा ही प्रकटहोतीहै अन्यथानहीं। अरु जिनशरीरोंद्वारा धर्मरक्षणात्मकशक्तिप्रकटहोतीहै सोई अवतारशरीर कहेजातेहैं ताते परमात्माका अवतारमाननायोग्यहै। अरु जे कोई पुरुषकहतेहैं कि सर्वशक्तिमान्परमात्मा बिनाही विशेषरूपकेधारणकिये सर्वकुछकरताहै उसको अवतारहोनेकी आवश्यकतानहीं सो उनपुरुषोंका वाक्य माननेयोग्यनहीं क्योंजो उनकेवाक्यमें कोईप्रमाण अरु दृष्टान्तनहीं। ताते हे सौम्य सर्वशक्तिमान्परमात्मा अपनेविषे विशेषरूपधारणकरके निसद्वारा अपनी सर्वशक्तिको प्रथक्२प्रकटकर अनुभवकरेहै ताते परमात्माने अपनीसर्वशक्तिको प्रकटअनुभवकरनेके अर्थ अपनेविषे आकाशादि जो२ विशेषरूप धारण कियेहैं सो सर्व सामान्यतासे परमात्माकाही अवतारहैं। अरु सो सर्व महाकल्पपर्यन्त रहतेहैं ताते उनको नित्य अवतारकहतेहैं निस नित्यअवतारस्वरूपजगतविषे सर्व प्रजाकी कल्याणार्थ जो धर्मरूपसे क्रिया स्थापितकिया है तिस धर्मकी असुरोंद्वारा जब२ हानिहोतीहै तब२ परमात्मा अवतारशरीर धारणकर धर्मरक्षणकरताहै।

अरु धर्मरक्षणोत्तर पुनः तिस शरीरको अपने निर्विशेष स्वरूपविषे तिरोधानकरताहै ताते उस अवतारशरीरको नैमित्तिकअवतारकहतेहै क्योंजो उन अवतारशरीरोंकाहोना निमित्तपायकेहै। तथाच{यदा यदाहि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत। अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानं सृजाम्यहम्} इति भगवद्गीताके अ० के मेंश्लोकमें। ताते निर्विशेष परमात्मा अपनेविषे राम कृष्णादि रूपसे विशेषरूपधारणकरके अपनी धर्मरक्षणात्मक शक्तिको प्रकटकरेहै। ताते हे सौम्य रामकृष्णादिकोंको धर्मरक्षक सर्वोत्तम ईश्वरावतार मानना सिद्ध अरु प्रमाणभया इति सिद्धम् ३ ॥

॥शिष्य॥

॥हे भगवन् आपने श्रुति युक्ति अनुभव दृष्टान्त प्रमाणपूर्वक संपूर्ण सचराचरजगत्को उसकी पृथक् सत्ताके अभावसे एकपरमात्मसत्ताही प्रतिपादनकिया अरु तिसद्वारा संपूर्ण जगतको सामान्यतासे परमात्माका अवतार प्रतिपादनकिया। अरु परमात्माके जगत् रूप विशेष अवयवोंद्वारा परमात्माकी सर्वशक्तिमत्ता प्रतिपादनकिया सो सर्व यथार्थहै क्योंजो अव्याकृतादि तृणपर्यंत संपूर्ण चराचर कार्यकारणात्मक जगत्के पूर्व एक अद्वैत परिपूर्ण परमात्मसत्ताही रही तिस पर-

मात्मसत्तासे संपूर्ण जगत् उत्पन्नभयाहै सो सर्व वास्तवमें परमात्मसत्ताहीहै। अरु तिसी द्वारा परमात्मा की सर्वशक्तिमत्ता प्रत्यक्ष जाननेमें आवतीहै ताते सामान्यताकरके संपूर्ण जगत् परमात्माका नित्यअवतार है ऐसा आपने प्रतिपादनकिया सो भी यथार्थहै। अरु परमात्माके जगत्रूपनित्य अवतारविषे धर्मरक्षाके अर्थ रामकृष्णादिरूपसे परमात्माका नैमित्तिक अवतार होना आपने प्रतिपादनकिया तिसविषे हमको कुछ संशयहै क्यों कि परमात्माने अपनी इच्छासे अपनेही विषे जो२ आकृति धारणकियाहै सो सर्व सामान्यता करके परमात्माका अवतार आपने कहाहै तैसेही रामकृष्णादिकभी सामान्य अवतारहैं परंतु उनको सर्वसामान्यअवतारकी अपेक्षामें सर्वसे अधिक ईश्वरकरके माननेहैं सो अयोग्यहै। अरु आपने कहा कि धर्मरक्षणार्थ रामकृष्णादिरूपसे ईश्वरने अवतार धारणकिया है सो बनेनहीं क्यों जो ईश्वरने अपने अवयवभूत जगत्रूप प्रजाके हितार्थ जिसधर्मको स्थापितकियाहै तिस अपने२ धर्मकीरक्षा सर्वकोई करतेहैं ताते सर्व प्रजाके धर्मरक्षणार्थभी रामकृष्णादिरूपसे ईश्वरका प्रथक अवतारहोनाबनेनहीं। अरु रामकृष्णादिकोंका उत्पत्तिहोना आकाशादिकोंवत् नहीं किंतु उनकाउत्

पत्तिहोना मातापिताद्वारा शास्त्रकारोंने प्रतिपादना कयाहै अरु उनविषे शोक मोहादि जीवधर्म शास्त्रद्वारा विदित भयाहै अरु उनविषे ईश्वरीशक्ति जगत्कर्तृत्वादिकों का अभावहै ताते उनको ईश्वरावतारकरके मानना अरु कहना हमारेविचारसे योग्यनहीं। ताते हे प्रभो इस विषयमें भी श्रुतिप्रमाणपूर्वक जैसाहोय तैसा अाज्ञाकरिये कि जिसकरके अवतारविषयकसंशयनिवृत्तहोय॥

॥गुरु॥

॥हे सौम्य अब तुमने तीन प्रश्नकियेहैं तहां प्रथमय हहै जो ईश्वरके जगत्रूप सामान्य अवतारमें रामकृष्ण आदि भी सामान्य अवतार होय तो हो परंतु उनकोसर्वसे अधिक ईश्वरकरकेमाननायोग्यनहीं। अब तिसका उत्तर श्रवणकरो हे सौम्य सामान्यताकरके संपूर्ण सचराचरजगत् एकपरमात्माकाही अवयवभूत अवतारहै तिसमें संशयनहीं तथापि परमात्माके जगत् रूप सामान्य अवतारविषे जिसमें परमात्माकी जिस २ शक्तिकी विशेषताहोतीहै सो उसशक्तिकी विशेषताद्वारा सर्वसामान्यकी अपेक्षा विशेष मंतव्यहोताहै। देखो सर्व सामान्यजीवोंकी अपेक्षा इस मनुष्यशरीरमें ईश्वर की विवेकादिशक्तिकी विशेषताहै ताते सर्वजीवोंकी अपेक्षा मनुष्य सर्वसे उत्तम मंतव्यहै। अरु उन उत्तम

सामान्य मनुष्योंमें जो विद्या वर्ण शील रूप कुल शान्ति
आदि परमात्माकी दैवीसंपदारूप शक्तिकी विशेषताक
रके युक्तहोताहै सो विशेष उत्तम मंतव्यहोताहै। उनवि
शेषउत्तम सामान्य मनुष्योमें जो पुरुष परमात्माकी।
धर्मप्रजापालनादि अरु साहस उदारता ऐश्वर्यताआ-
दि परमात्माकी उत्तमशक्तिकर युक्तहोयतो उक्तशक्ति
की विशेषतासे सामान्य विशेषउत्तममनुष्योंकी अ-
पेक्षामें वो मंडलेश्वर उत्तमोत्तम मंतव्यहै। अरु उन
सामान्य मंडलेश्वर राजाओंकी अपेक्षामें उन मंडलेश्व
रोंका अधिपति चक्रवर्त्ती राजाधिराज परमात्माकीउ-
त्तमशक्तियोंके अंशकी विशेषता सम्पन्नहोनेसे शास्त्र
प्रमाण "नाविष्णुपृथिवीपती,, तथा(नराणांचनराधिप)
गीता अ१०के श्लोकमें। सर्व मंडलेश्वरादि मनुष्योंकी-
अपेक्षा ईश्वरांश मंतव्यहै अरु माननेहैं। नाते हे सौम्य
ईश्वरके जगतरूप सामान्य अवतारोंमें जिस२ विषे प-
रमात्माकीशक्तिकी जिस२प्रकार न्यूनाधिकयताहै ति-
स२ अंशकोलेके उन२विषे उत्तम मध्यमताकी तारतम्य
ताहै सो सर्व यथाविभाग मंतव्यहै। अरु रामकृष्णादि
परमात्माके नैमित्तिक विशेष अवतारहैं तिनविषे अति
उत्तम परमात्मशक्तिकी बाहुल्यताहै तहां प्रथम अयो-
ग्यसंभवशक्ति दूसरे अपने भक्तोंको अभीष्टरूपसे द-

र्थानदे मनोरथसिद्धकरनेकीशक्ति। तीसरे अपनेविषे काममोहादिमुद्राको देखावतसंते निष्काम निर्मोहादि स्वभावशक्ति। चतुर्थ वरबलगर्वित जगत्विजयीअसुरोंका नाशकरनेकीशक्ति। पंचम अपने स्थापितकिये धर्मप्रजाकी पालनशक्ति। षष्ठ सर्वमंडलेश्वरादि राजाओंके शिरोमणिमहाराजाधिराजत्वशक्ति। सप्तम रूप गुण विद्या उदारता आदिशक्ति। अष्टम सर्वोत्तम मोक्षसाधक जे ब्रह्मविद्या तिसकाउपदेशकर अधिकारी जिज्ञासुको तत्वमस्यादि महावाक्यद्वारा ब्रह्म र आत्माका अभेदज्ञानउपदेशकर मोक्षकरनेकी आचार्यत्वशक्ति॥ हे सौम्य इत्यादिक जोपरमात्माकी सर्वोत्तमशक्ति तिसके अंशोंकी आधिक्यतासे सर्व सामान्य अवतारोंकी अपेक्षामें रामकृष्णादि विशेष नैमित्तिक अवतारोंकों सर्वसे श्रेष्ठ ईश्वरअवतार मंतव्ययोग्य है अरु मानतेहैं। हे सौम्य इसप्रकार परमात्माके जगत्रूप सामान्यअवतारके आवांतर विशेष अवतारकों विचारके परमात्माकी सर्वोत्तमशक्ति की विशेषता से रामकृष्णादि सर्वोत्तम अवतारहैं सो चाहे अयोनिसंभवहैं चाहे सयोनिसंभवहैं तथापि उनविषे परमात्माकी सर्वोत्तमशक्तिकी बाहुल्यतासे वो ईश्वरअवतारही मंतव्यहै तिसको कुतर्कियोंके वाक्यके त्यागपू-

र्वक अप्राप्ति करीत्या भलीप्रकार विचारकरो॥

॥हे सोम्य अबअपने हिती पक्षका उत्तर श्रवणक-
रो तुमने कहा कि ईश्वरने सर्वप्रजाकेअर्थ सर्वका र-
क्षक जिस धर्मको उत्पन्न कियाहै तिस अपने२ ध-
र्मकी रक्षा सर्वकोई करतेहीहै ताते धर्मरक्षणार्थ२
रामकृष्णादिरुपसे ईश्वरका अवतारहोना संभवेनहीं।
अब तिसका समाधान भीश्रवणकरो। हे सौम्य ईश्व
रकी अदिनीति जैसीहै तैसेही होताहै अन्यथानहींहो
ता परमात्माकी जोवाक्यसिद्धिता अरु दयालुता उदार-
ताअादि शक्तिहै सो जिन२ देवता मुनि तपस्वियोंके हा-
रा प्रकटहोतीहै सो२ ईश्वरके अंशावतारहैं तिनको
तपविनयअादि सेवासे प्रसन्नकरके अपने अभीष्ट
सिद्ध्यर्थ उनके वाक्यवरदान पायके तिसके आश्रय
अजर अमर अभय जगत् विजयीहोय देव ब्राह्मणसं-
तोंके द्वेषी स्वयंअपनेआपको ईश्वरमान देवतादिस-
र्वप्रजाको अपने अनुकूल मार्गोमें वर्तावतेहैं अरु आ-
प ब्राह्मणादि उत्तमकुलमें उत्पन्नहोतसंते भी केवल
बाह्यक्रिया यज्ञ अग्निहोत्रादि करके किंचित् धर्ममुद्रा
अपनेविषे देखावेंहैं परंतु अंतःकरणविषे काम क्रोध
लोभ मोह मद मान मत्सरता अहंकारादि आसुरीसंपदा
कर पूर्णतासे युक्तहै तिन असुरराजा हिरण्यकशिपुग

वर्णादिवर्तोंके राज्यकी प्राबल्यतामें सामान्यप्रजा असु
रोंने सनातनीय धर्मकी रक्षामें समर्थनहींहोने क्यों जो
उन वर बल गर्वित असुरोंकोवरदानहै कि जो ईश्वरा
वतार ज्येष्ठश्रेष्ठोंसे प्राप्तकियाहै तिसकी निष्फलता
पूर्वक असुरोंकाबधकरके जो धर्मरक्षणकर्तव्यहै तिस
कोसमर्थनहीं। देखो कश्यपऋषिका पुत्र हिरण्यकशि
पु जातिकरके उत्तम ब्राह्मण यज्ञादिकामुकबाह्यकर्म
काकर्त्ता परंतु अंतःकरणके स्वभावकरके सर्वआसु-
रीसंपदाकरयुक्त देव ब्राह्मणादिकोंका विघातक सो
जोकि सनातनीय सर्वोत्तम सर्वात्मभावधर्म तिसको
आश्रयकरता प्रह्लादनामा असुरपुत्र तिसको सना
तनीय सर्वोत्तमधर्ममें प्रवृत्तरहनेकेकारण हिरण्यक-
शिपु पिताने कईबार अनेकप्रकारसे उसके प्राणघात
करनेका उद्योगकिया परंतु जिसका सर्वप्रकारसे ईश्व
र रक्षकहै तिसका विघातकैसेहोय अर्थात् नहींहोता
ऐसाविचारके ईश्वरने हिरण्यकशिपुके सर्वउद्योगनि-
ष्फलकिये। अरु परिणाममें जिसप्रकारसे उसके सर्व
वरदानोंकी निष्फलताहोतीजानी तिसहीप्रकारपरमा-
त्माने अपनेविषे आकृतिधारणकर देशकालादिसर्व-
को अनुपायकर श्रीनरसिंहरूपसे उस धर्मविघातक
असुरका वधकर धर्म देव ब्राह्मण संत आदिकोंकी र

स्वाकिया। ताते हे वादी इस नीतिप्रमाण वर बल गर्वित असुरराजाओंके जे ईश्वरीशक्तिमान् ज्येष्ठ श्रेष्ठोंद्वारा प्राप्तकिये वरदान तिसको जिसप्रकारसे निष्फलहोते परमात्माजानेहै तैसेही देशकाल आकृतिआदि सामग्री निमित्तकरके वरदानकी निष्फलतापूर्वक धर्मविघातक असुरोंकाबधकरके धर्मादिकोंकी रक्षाकरेहैं। ताते हेसौम्य तुमनेकहा जो सर्वप्रजा अपने२ धर्मकी रक्षाकरेहैं ताते धर्मरक्षणार्थ भी ईश्वरका रामकृष्णादिरूपसे अवतार होनाबनेनहीं। सो तुम्हारीकुतर्कबनेनहीं ताते तुम्हारे तर्कके समाधानमें जो परमात्माकी नीति तुम से कही तिसका विचारकरो जिससे तुमसारिखे कुतर्कियोंकी तर्कके अभावपूर्वक सर्व आस्तिकधर्म तुमकों ज्ञातहोवे॥

॥हे सौम्य तृतीयतर्कतुम्हारा यहहै जो रामकृष्णादिकोंका उत्पन्नहोना माता पिताकेद्वारे हैअरु उनविषे शोकमोहादि अज्ञानलक्षण धर्मद्वारा विदित भयेहैं अरु उनविषे जगत् कर्तृत्वादि ईश्वरीशक्तिका अभावहै ताते रामकृष्णादिकोंको ईश्वर अवतारकरकेमानना-योग्यनहीं। हे सौम्य इसतुम्हारी तर्कके अवान्तर तीन तर्कहैं तिसका उत्तर भी संक्षेपमात्र क्रमपूर्वक श्रवण करो। हे सौम्य जिनग्रंथोंमें रामकृष्ण अवतारकाशीके माता पिता प्रतिपादनकियाहै उनहीं ग्रंथोंमें उनको अ-

योनिसंभव भी लिखाहै तिसका विचारकरो देखो पर
मदयालु कृपासागर भक्तवत्सल स्वजनमनोभीष्टसि-
द्धकरता परमात्मा जो कि सर्वप्रकारके श्राकारविकार
रहित परमशांत चैतन्यतत्वहै तिसकों विशेषरूपसे श्र-
वलोकनकरनेकी कामनासे शमदमादि पूर्वक तपयज्ञदा
नादि जे ईश्वरप्राप्तिके साधनहैं तिनको श्रद्धापूर्वक भ-
लीप्रकार करतेहैं तब परमदयालु परमात्मा श्रद्धाप्रीति
शुद्धभावना तपादिधर्माचरणपूर्वक श्रपनेविषेदेख श्र-
पनी भक्तवात्सल्यता को विचार उनभक्तोंके श्रभीष्ट
सिद्ध्यर्थ जो दृष्टिका विषय नहोतसंते सर्वका द्रष्टाहै
सो जलतरंगवत् श्रपनेविषे "पुरुपविधतामन्वयम्,
इसश्रुतिके प्रमाणसे श्रतिशोभतीयद्दिभुज किंवाच-
तुर्भुजादि श्रनूपम श्रलौकिक श्रकर्तृम मानुयाकृति
धारणकर भक्तोंको दर्शनदे उनके सर्व श्रभीष्टसिद्ध
करेहै। तब श्रपने श्रभीष्टकोपाय परमानंदितचित्त
ईश्वरके स्वरूपलावण्यतासे श्राकर्षित मन जे भक्तहैं
सो उसकालमें ईश्वरस्वरूपमें जिसप्रीतियुक्त श्रपने
मनकी स्थिति पावैहैं सो वाणीका विषयनहीं श्ररु सो
ईसगुणउपासककी मुक्तिहै। तिस प्रीतिकेवश लाभा
लाभोपजायते इसन्याय प्रमाण जो जगत्का लालन
पालनकरनेवाला परमात्मा तिसको श्रत्यंत प्रीतिसे

ग्रहर्निश लालन पालन ग्रवलोकनकरें ऐसी प्रीति उपजे है तब "मनसो मनो" इस श्रुतिवाक्य प्रमाणसे मनका भी मन मनमें रहनेवाला सर्वांतर्यामी परमात्मा से ग्रपने भक्तके मनकी जो ग्रत्यंत शुद्ध भावना प्रीति सो ग्रपने ही विषे जानके ग्रपने श्रीमुखसे ग्रत्यंत गंभीर मधुरवाणीकर "वरंब्रूहि २" वरदानमांगो २ ग्रर्थात् जो ग्रभीष्ट होय सो मांगो ऐसी ग्राज्ञा करेहै। तब ईश्वरके इस वाक्य श्रवणसे हर्षितचित्त भक्तजन ग्रपना जो ईश्वर विषे ग्रभीष्टहै सो याचना करेहैं तब परमात्मा उनको ग्रभीष्टवरदान दे ग्रपने विशेषस्वरूपको सामान्यस्वरूपविषे ग्रंतर्ध्यान भी करेहै। तहां जिन २ भक्तोंने परमात्मासे यह वरदानमांगेहैं कि हे भगवन् हे कृपासागर हे भक्तवत्सल हे दीनदयालु ग्रापकरके रचित इस संसारमें प्राणधारी जीवोंको जेतनी प्रीत पुत्रोंमें ग्रापने नियतकियाहै तेतनी ग्रन्यमें नहीं यह ग्रापकी ग्रादि नीति है सो ग्रनिवार्यहै। ग्ररु हमको ग्रपनी प्रीति सर्वप्रकारसे ग्रापके स्वरूपलावण्यनाविषे ग्रभीष्टहै ताते हे भगवन् ग्राप हमारे पुत्रहोवो। हे सौम्य इसप्रकार जब भक्तजन ग्रपने ग्रभीष्टसिद्ध्यर्थ परमात्मासे वरदान याचना करेहैं तब उनके मनोरथ सिद्ध्यर्थ भक्तके उसही जन्ममें किंवा ग्रन्यजन्ममें ग्रपनेदियेवरदानानु-

कूल देशकालआदिकोंकी अनुकूलतासे अपनी माया करके उन भक्तोंकेयहांगर्भरूपसे प्रतीतहोयहै तब अपनी स्थापितकरी मनुष्यजन्मोत्पत्तिकालकी{दशवामासान्नन्त} इस छां०उ०के पंचम प्रपाठक पंचाग्निविद्यामेंकीश्रुतिप्रमाण दश वा नव मासकी अवधि तिसकालकों देख विचारके पुनः परमात्मा उसही स्वरूपसे कि जिसस्वरूपसे पूर्व वरदानकालमें दर्शनदियाहै उस अनन्त भाग्यशाली पुण्यागार जो किपैदवस्थाकरके गर्भवतीहै तिसकों दर्शनदे अपनी प्रतीतिकराय गर्भगतअपनी बालमायाकों आकर्षणकर तदाश्रित अपनेविषे बालकस्वरूप प्रतीत करावतसंते अपनेदियेवरदानकी साफल्यता अरु भक्तकेमनोरथ सिद्धयर्थ स्तनपानरुदनादिलीलाकों करेहै। ताते हे सौम्य परमात्माका जोरामकृष्णादिरूपसे अवतारहोनाहै तिसविषे मातापिताद्वारा उनकाहोना जो शास्त्रकारोंने प्रतिपादनकियाहै सो केवल परमात्माकी मायाशक्तिकों देखायाहै जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा अपनेदियेवरदान अरुभक्तके मनोरथकी साफल्यताकेअर्थ गर्भादिमायाकोंदेखाय बालक्रीडादिलीलाकोंकरेहै। अरु आप अज परमात्मा कदापि जन्मभावकों पावतानहीं। तथाच{नजायतेम्रियतेवा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्नबभूवकश्चित्}

इत्यादि क० उ० की २ वल्लीकी १९ मी श्रुतिमें । ताते हे सौम्य जिन ग्रंथोंमे रामकृष्णादिकोंके मातापिता प्रतिपाद्य हैं उनही ग्रंथोंमें उनको अयोनिसंभव भी लिखाहै ताते जिसका कहे प्रकार विचारपूर्वक रामकृष्णादिकोंकेविषे ईश्वरअवतारहोनेका निश्चयकरो । अरु जो कदापि उनको सयोनिसंभवही मानोगे तो भी {य० रेतसिलिहन्रेत मंतरोयं, सवाअयपुरुषोजायमानः, शरीरमभिसंपद्यमानः} इत्यादि बृ० उ० की श्रुतिके प्रमाणसे सामान्यरीत्या भी उनका ईश्वरअवतारहोनासिद्धहै । अरु जिसमेंभी पूर्वम कहे प्रकार ईश्वरके ऐश्वर्यशक्तिकी विशेषता जो शास्त्रकारोंने प्रतिपादनकियाहै होनेसे सर्वसामान्यअवतार की अपेक्षामें भी विशेषकरकेमंतव्यहै अरु आननेभीहै, सामान्यप्रजा अरु राजावत् । अरु जो गर्भद्वारा उपजना है सो शरीर उपजनाहै आत्मानहींउपजना आत्मातोम हासूक्ष्म उत्पत्ति प्रलयसेरहित अज अविनाशीसदास त्यरूपहै । ताते हे सौम्य सिद्धान्तयहहै कि रामकृष्णकेग वतारशरीर अयोनिसंभवहीहैं मातापिताद्वारासयोनि संभवनहीं । अरु जो कदापि तुमको उनविषयक सयो निसंभवमेंही आग्रहहै तो भी उनविषे ऐश्वर्यशक्तिकी विशेषताहोनेसे वो ईश्वरअवतार ही सिद्धहै इतिसिद्धम्

हे सौम्य और श्रवणकरो रामकृष्णादि ईश्वरअव-

तारविषे जे शोकमोहादि अज्ञानलक्षण मुद्रा देखाई हैं सो केवल लोक के उपदेशार्थही देखाई हैं वास्तवमें उन विषे शोकमोहादिनहीं। जैसे कोई असाधुपुरुष अपने प्रयोजनके सिद्ध्यर्थ किसी सत्पुरुषके आगे आर्जवता आदि साधुमुद्राको अपनेविषे देखावेहै परंतु उस साधुमुद्राको बाह्यदेखावनेसे उस असाधुपुरुषको जाननेवालेजे विवेकी पुरुषहैं सो उस असाधुको साधुनहीं मानते। तैसे ही रामकृष्णादि अवतारशरीरकरके देखाईजे लोकके उपदेशार्थ अपनेविषे शोकमोहादिअज्ञानलक्षण बाह्यमुद्रा तिसको सविवेकी ज्ञानवान्पुरुष उन अवतारशरीरोंविषे शोकमोहादिकोंकी सत्यता मानतेनहीं। हे सौम्य देखो जबक पंचवटीमें रावणने कपटसे संन्यासीकावेषधारणकर श्रीरामजीकी परोक्षतामें रामपत्नी जानकीकाहरणकिया तब प्रियाके विरहमें रामचंद्रने रुदनमुद्रापूर्वक जानकी अन्वेषणमें वृक्षादिजडोंसे प्रश्नकर अपनेविषे शोकमोहकीमुद्रा देखाई तिसकरके धर्मरक्षणार्थ सर्वप्रजाको यह उपदेशकिया कि जानकीऐसी पतिव्रता साध्वी स्त्री कि जिसने अपने स्वसुर अरु पिताके गृहका सर्वराज्यवैभवसरवत्यागके केवल पतिसेवापरायण हो अतिदुःखरूप वनमें निःशंकतासे पतिकेसाथ गमनकिया ताने

पतिव्रता। अरु जिस पत्नीके होते स्वर्गसाधकजे यज्ञअग्निहोत्रादिकर्म तिसकेकरनेका अधिकारी पुरुष होताहै ताते सो साध्वी ऐसी पत्नीकाजो किसीप्रकारसे वियोग होयतो कर्माधिकारी पुरुषकों कर्मकाफलजे स्वर्ग तिसकी प्राप्तिके साधनमें विघ्नहोनेसे उस पतिव्रता साध्वी स्त्रीके अर्थ शोककर्तव्यहैं। अरु रामचंद्रकी शोकावस्थाको देख श्रीशिवप्रिया सतीने ईश्वरअवतारकीपरीक्षाकेअर्थ जानकीका स्वरूप धारणकर रामजीकेसनमुखहो कहा कि मैं सीतातोविद्यमानहौं तब यह हा सीता हा सीता करतेहौ सो इसका कारणक्या तबरामजीने जानकी विरह अरुतिसके अन्वेषण कालमें जानकी वेषमें सती को देख परमपूज्यशिवजीकी प्रिया जान प्रणामकर के कहा कि हे जगदंबा इसकाकारण स्वामी शिवजीसे प्रश्नकरना। इसप्रकार जब रामजीनेकहा तब सती लज्जावानहोय अन्तर्ध्यानभई। हे सौम्य अब विचारकरके देखो जबकि रामजी जानकीके विरहसे अत्यन्तव्याकुलहोय रुदनमुद्रापूर्वक अन्वेषणकरते वृक्षपाषाणादिजडोंसे प्रश्नकरतेफिरे तिस शोकमोह अज्ञानलक्षण अवस्थामें जिसके विरहसे यह अवस्थाप्राप्तभई तिसीजानकीकेरूपसे सतीको देखा अरु तिसविषे पत्नित्वभावन्यायके तिसकेवास्त

विकस्वरूपको जानि जगदंबा विशेषणादे प्रणामकरके कहा कि इसका कारण अपनेपति शिवजीसे पूछना सो यह अत्यंत शुद्धविवेक बनेनहीं को जो शोकमोहादिरूप अज्ञानलक्षणका अरु शुद्धविवेकका परस्पर तेजतिमिरवत् विरुद्धहै ताते एककालमें इनदोनोंका समुच्चय होनाबनेनहीं ताते रामचंद्रविषे जे शोकमोहादिप्रतीतभये सो केवल बाह्यमुदा लोकोपदेशार्थहीहैं वास्तवनहीं अरु सतीकीलीलासे यहउपदेशकियाहै कि धर्मात्मा पुरुषको कैसीही आपत्ति प्राप्तहोय तिसके बर्तनसंतेभी विवेककात्यागनकरे। अरु अपनी पत्नीके अभावमेंभी अन्य पत्नी स्वयं अपनी प्रसन्नतासे आयप्राप्तहोय तो भी उसको मातासमानजानके प्रणामकरे परंतु उसको पत्नीभावसे अंगीकार न करे अर्थात् एकपत्नीव्रतमेंप रायणरहै। अरु हे सौम्य जिसजानकीके विरहसे व्याकुल अत्यंतशोकवान् रामजी तिन्होंने जब अनेकप्रयत्नसे स्वपत्नीहरणकर्त्ता रावणका ससेनासपरिवारके नाशकिया तब विभीषण हनुमानआदि रामजीकीआज्ञासे जानकीको रामजीके समीपल्याये तिसकालमेंउस जानकीको कि जिसके विरहसे व्याकुल पंचवटीमें रुदन पूर्वक अन्वेषणकरते जड़ वृक्षपाषाणादिकोंसे प्रश्नकरतेफिरे परगृहरहैनेके कारण धर्ममर्यादासे

गकिया तब निस धर्मधुरंधर रामजीविषे शोकमोह
का आरोप असत्यहै सो अविवेकी अज्ञानी करतेहैं हे सो
म्य जब रामजीने स्वपत्नीसीताका त्यागकिया तब अत्यं
तखेदको प्राप्तभई पतिव्रता साध्वी सीता निसने विनयकि
या कि हे भगवन् हे स्वामि हे अंतरात्माप्राणपति आप
के परोक्षमें यह दुष्टरावण छलपूर्वक अपनी बलात्का
रतासे मेराहरणकर लेआया अरु मैंने उसदुष्टको नेत्र
उठाय देखाभी नहीं केवल आपके भजन सुमिरणध्यान
बलके आश्रय अद्यावधि अपनेप्राणकी रक्षाकियाहै
ताते मैं निरपराधहौं अरु जो आपके वियोगहोतेही इस
शरीरसे प्राणने पयानन किया निस अपराधसे मेरा त्या
गकरतेहौ तो तहां भी मेरा अपराधनहीं क्यों जो जिसका
लमें आपकी परोक्षतामें दुष्टरावणने मेरा हरणकिया उ
सहीकालसे यह श्यामसुंदर धनुषबाणधारी मनोहरमू
र्ति ध्यानवृत्तिद्वारा मेरे हृदयमें दृढ़तासे स्थितभई निस
ने अरु स्वस्वयंवरमें शिवधनुषके भंगद्वारा अनुभव
कियाजो आपके श्रीहस्तका पुरुषार्थ निसके आश्रयदु
ष्टरावणके वधपूर्वक आपकरके अपनीस्वीकारताकी र
आपाने इसउत्क्रामणहोनेप्राणको इसदेहसे पयानकर
ने नहिया एतदर्थ भी मेरा अपराधनहीं सो इन सर्व बात्तों
को आप अंतर्यामीरूपसे जानतेहौ तब विशेष क्याकहैं

हे सौम्य इसप्रकारजब सीताने अपनी शुद्धताकी विनयकिया तब रामजीने कहा कि इन बार्त्ताओंसे तो तुम्हारी शुद्धिनहीं तब रामजीके अंतरअभिप्रायको जानके सीताने लक्ष्मणजीसे कहा कि हे सौम्य हे धर्मवेत्ताओंमेंश्रेष्ठ आप इसकालमें मेरेधर्मकी सहायताके अर्थ चिताप्रज्वलितकरिये मैं उसमें प्रवेशकरौं अरु साक्षात्अग्निदेव मेरी शुद्धताको स्वामीके समक्ष प्रकटकरै। हे सौम्य इसप्रकार जब जानकीने लक्ष्मणजीसे कहा तब लक्ष्मण धर्मात्माने शीघ्रही चिता प्रज्वलितकिया तब अतिप्रसन्नता पूर्वक रामचंद्रका ध्यान स्मरणकरती अपने मनको आश्रयकर अग्निमें प्रवेशकरतीभई तब उसके मनके आश्रय {स न दाह्यते} इस छा०उ०के ६प्रपाठककी श्रुतिप्रमाणसे अग्निअपने दाहकस्वभावको त्यागके हिम चंदनवत् शीतलहोताभया अरु उस सत्यव्रतीपतिव्रता सीताको अग्रसरकर आप ब्राह्मणवेष से श्रीरामचंद्रको जानकी की शुद्धताकी प्रशंसा श्रवणकरावतभये जानकीकोअर्पणकरताभया तब अग्निद्वारा जानकी की शुद्धतालोकविषे विख्यातकर जानकीको आलिंगनदे अपने वामभागमेंस्थापितकर श्रीलक्ष्मीनारायणवत् श्रीसीतासम सुशोभित होतेभये। हे सौम्य इसलीला करके भगवान् रामचंद्रने सर्वप्रजाको यह उपदेश

कियाहै कि स्त्री कैसीही पतिव्रता साध्वीहोय परंतु जो चिरकालसे अन्यकेगृहमें रहीहोयतो यावत् उसकी सम्यकप्रकारसे शुद्धि न करले तावत् पर्यंत उसकेवाक्यकाविश्वासकर सहसाउसकाग्रहणनकरना। हे सौम्य अबजो श्रवणकरो श्री रामचंद्रजीसर्व देवताआदिकोंके समक्ष साक्षात् अग्निद्वारा सर्वप्रकार जानकीकी शुद्धिकर पुनः लक्ष्मणादि सर्व सेनापतिसहित पुष्पकविमानमें आरूढहोय अपनीराजधानी अवधपुरीमेंआय भर्तादि भ्रातासंयुक्त धर्मनीतिपूर्वक राज्यपालनकरतेभये तदनंतर एक समय रात्रिको अपनीप्रजाके योगक्षेम अवलोकनार्थ स्वयं रामजी धनुषबाण धारणकर एकाकी वीरयात्रा गस्त केअर्थ निकले तब एकस्थानमें किसी नीचजाति रजक धोबी के गृह स्त्रीपुरुषमें कुछ कलह होतारहा तिससमय उस पुरुषने अपनी स्त्रीसे कहा कि हे पापचारणी में कुछ रामनहींहों जो रावणके घरमें रही सीता को पुनः अपनेघरमें लेआये। ताते तू मेरेघरसे निकल मैं तुझको रखनेको नहीं। हे सौम्यइस प्रकारसे अपनी स्त्री को कहना जो वो नीच पुरुष तिसके वाक्य श्रवणकरतेवीरयात्रासे निवृत्तहोय अपने भवनको पधारतेभये गुरु विचारतेभये जो इस शुद्ध जानकीके भी ग्रहणकरनेसे लोकापवादकी निवृत्ति

न भई ताते इसलोकापवादकी निवृत्तिकेअर्थ जानकी का त्यागकरनाही उचितहै ऐसा विचारके जानकीहरण ही पुनः वनयात्राकी वरयाचनाकराय उस पतिव्रताशिरोमणि साध्वी गर्भवती जानकी को लक्ष्मण धर्मात्माके वाल्मीकिमुनिके आश्रमको चिरकाल निवासार्थभेज त्यागकरतेभये। हे सौम्य इसलीलाकरके रामजीने सर्वप्रजाको यह उपदेशकिया कि जो व्यवहारआचरण धर्मशास्त्रादिकोंकरके निर्दोष भी होय तथापि जोउस आचरणमें किसीप्रकारका लोकापवाद होय तो विवेकीपुरुष उस आचरणका त्यागही करे। हे सौम्य देखो जिसरामजीने सीताऐसी पतिव्रता साध्वी सती रूप गुणकी आकर नागर अपनी प्राणप्यारी गर्भवती निर्दोष स्त्रीको केवल नीचपुरुषकरके कहे लोकापवाद तिसकी निवृत्तिके अर्थ त्यागकरदिया तब तिस विवेकी धीर धुरंधर धर्मात्मा रामचंद्रके विषेमें शोकमोहादिको का आरोपकर उनको ईश्वरअवतारनमानके साधारण प्राकृतमनुष्यमाननेहें सो पुरुष विचारशून्य नास्तिक अपने को लोकविषे महात्मा यती विदितकर सनातनीय परम आस्तिक धर्मरूपी सीताके हरणकर्त्ता असुर रावणहैं उनके वाक्य सनातनीय परम आस्तिक सत्यधर्मावलंबी पुरुषोंको माननेयोग्यनहीं। हे सौम्य इसही

प्रकार श्रीकृष्णावतारकरके भी जो२ कामचेष्टादिलीला
कियाहै सो२ सर्व लोकोपदेशार्थहीकियाहै उनविषे वा-
स्तवमें कामादि विकार कदापिनहीं तिसका विस्तार ग्रंथ
गौरवताके भयसे यहां लिखानहीं जहां उनके चरित्रों-
का विचारव्यारव्यानकियाहै तहां सविस्तर देखलेना॥

हे सौम्य इस सर्वकहनेका अभिप्राय यहहै जो श्री
रामकृष्णादि ईश्वरअवतार शरीरोंमें जो२ शोकमोह
कामादि अज्ञानलक्षण मुद्रा अपनेविषे देखाई है सो
सर्व लोकविषे धर्मउपदेशार्थ ही आभासमात्रही दे-
खाई है वास्तवकरके उनविषे शोकमोहादि अज्ञान
मुद्रा कदापिनहीं। अरु रामकृष्णादि साक्षात् ब्रह्मभू
क्ति ब्रह्मवेत्ताहै तथाच {स योह वै तत्परमंब्रह्मवेदब्रह्मै
वभवति} मुंडक उ० के २ मुंडक के ९ मीश्रुतिमें। उन्होंने
अपने२ शिष्योंको ब्रह्मविद्याउपदेशकरके मोक्षकिये
हैं अरु उनके उपदेशकिये वाक्योंके ग्रंथ मुक्तिकोप
निषद् रामगीता भगवद्गीता भागवत्का एकादश
स्कंधादि अद्यावधि प्रकाशितहैं। अरु उनग्रंथरूप
वाक्योंके आश्रय श्रद्धा भक्तियुक्त आचरण विचार
अध्यासकरके अद्यापि अधिकारी पुरुष मोक्षहोते
हैं। ऐसे जे एक अद्वैत अभेद अनुभवी ब्रह्मोपदेशा
कर्त्ता ब्रह्मरूप परमाचार्य के विषे शोकमोहादि अ-

ज्ञानलक्षण कदापिनहीं जैसे सूर्यमें अंधकार नहीं। तथाच {तत्र को मोहः कः शोकएकत्वमनुपश्यत} ईशावास्य उ० के ७ मे मंत्रमें। अरु छां० उ० के सप्तमप्रपाठक की १ श्रुतिमें कहाहै कि {तरति शोकमात्मवित्} आत्मवेत्ता पुरुष शोकादि अज्ञानलक्षण से तरजाता है। तब तिसके साक्षात् अवतारीशरीरोंमें शोकमोहादि त्रिकालमें भी नहीं। अरु अवतारीशरीरोंमें शोकमोहादि अज्ञानमुद्रा आभासमात्र देखायाहै सो सर्वलोकउपदेशार्थही है। ताते रामकृष्णादि अवतारीशरीरोंमें देखे ये जे शोकमोहादि तिसका सूक्ष्मबुद्धि आस्तिकरीत्या कुतर्कके त्यागपूर्वक कहेप्रकार विचारकरो अरु उनविषे शोकमोहादिकोंका आभासमात्र सीपिमें रजतवत् असत्य अनुभवकर रामकृष्णादिकों को साक्षात् ईश्वरअवतार निश्चयकर सनातन आस्तिकधर्ममें स्थितहो। अरु जिनपुरुषोंको रामकृष्णादिअवतारशरीरोंमें शोकमोहादि अज्ञानमुद्राका निश्चयपूर्वक ईश्वरभावका अभावमंतव्यहै सो सूक्ष्मविचारशून्य अज्ञानी नास्तिकहैं तिनकासंग तुमसरीखेविचारशील आस्तिकबुद्धिवालेको करना योग्यनहीं आगे जो तुम्हारी इच्छा॥

हे सौम्य तुमने कहा कि रामकृष्णादिकों विषे

जगत् कर्तृत्वादि ईश्वरीशक्तिनहीं माने उसको ईश्वरअवतारकरके माननायोग्यनहीं सो यह भी तर्क तुम्हाराबनेनहीं क्यों जो रामकृष्णादिक ईश्वरके नैमित्तिकअवतारहैं जिस धर्मकी रक्षा अधर्मका नाश अरु संतों की रक्षा वरबलगर्वितअसुरोंका नाश करनेकेअर्थ अवतारशरीर धारणकियेहैं सोई कार्यकरके अपनेनिर्विशेषस्वरूपको प्राप्तहोतेहैं उनकाहोना कुछ जगत्कर्तृत्वार्थनहीं केवल अधर्म दुष्टोंके नाशपूर्वक धर्म साधुके रक्षणार्थहीहै। तथाच {यदायदाहि धर्मस्यग्लानिर्भवतिभारत। अभ्युत्थानमधर्मस्यतदात्मानंसृजाम्यहं॥ परित्राणायसाधूनांविनाशायचदुःकृतां। धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामियुगेयुगे}॥ इति भगवद्गीताकेअध्यायके श्लोक में। माने हे सौम्य जिस२ निमित्तसेब्रह्म ईश्वरअवतारधारणकरताहै सोई सो करताहै कुछ जगत्रचनाके न करनेसे रामकृष्णादि ईश्वरअवतारनहीं ऐसाकहना तुमारायोग्यनहीं माने सर्वकुतर्कोंत्यागके आस्तिकभावविषे स्थितहोवो॥

हे सौम्य यह धर्मरक्षणार्थ जो परमात्माका अवतारहोना तुम्हारेप्रतिकहा तहां जिसधर्मकीरक्षाकरताहै तिसको अवबोधकी आरव्याप्तिका पूर्वक कहतेहैं तिसको श्रद्धान्वितहोय सावधानतासे श्रवणकरो। यह

गाथा सामवेदकी तलवकार शाखाके केनोपनिषद्के तृतीय अरु चतुर्थ दो खंडोंमें परमात्माके व्यक्ताव्यक्त दोनोंप्रकारके अवतार अरु तिसकरके आसुरीसंपदारूप अधर्मके नाशपूर्वक दैवीसंपदा अरु ब्रह्मआत्माका अभेद ज्ञानरूप धर्मको प्रकाशितकियाहै सोसर्व वेदकी अरुव्याख्याकरद्वारा श्रवणकरो ॥

॥मूलश्रुति॥

ब्रह्म ह देवेभ्यो विजिग्ये तस्य ह ब्रह्मणो विजये देवा अमहीयन्त त ऐक्षन्तास्माकमेवायं विजयोऽस्माकमेवायं महिमेति ॥१४॥१॥ तद्धैषां विजिग्यौ तेभ्यो ह प्रादुर्बभूव तन्न व्यजानन्त किमिदं यक्षमिति ॥१५॥२॥ तेऽग्निमब्रुवन् जातवेद एतद्विजानीहि किमेतद्यक्षमिति तथेति ॥१६॥३॥ तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत् कोऽसीत्यग्निर्वा अहमस्मीत्यब्रवीज्जातवेदा वा अहमस्मीति ॥१७॥४॥ तस्मिंस्त्वयि किं वीर्य्यमित्यपीदꣳ सर्वं दहेयं यदिदं पृथिव्यामिति ॥१८॥५॥ तस्मै तृणं निदधावेतद्दहेति तदुपप्रेयाय सर्वजवेन तन्न शशाक दग्धुं स तत एव निववृते नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद्यक्षमिति ॥१९॥६॥ अथ वायुमब्रुवन् वायवेतद्विजानीहि किमेतद्यक्षमिति तथेति॥२०॥

तदभ्यद्रवत्तमभ्यवदत्कोऽसीति वायुवा अहमस्मीत्यब्रवीन्मातरिश्वा वा अहमस्मीति॥२१॥८॥ तस्मिंस्त्वयि किं वीर्यमित्यपीदꣳ सर्वमादद्दीयं यदिदं पृथिव्यामिति ॥ २२॥९॥ तस्मै तृणं निदधावेतदादत्स्वेति तदुपप्रेयाय सर्वजवेन तन्न शशाकादातुं स तत एव निववृते नैतदशकं विज्ञातुं यदेतद्यक्षमिति ॥ २३॥१०॥ अथेन्द्रमब्रुवन्मघवन्नेतद्विजानीहि किमेतद्यक्षमिति। तथेति तदभ्यद्रवत्तस्मात्तिरोदधे ॥ २४ ॥११॥ स तस्मिन्नेवाकाशे स्त्रियमाजगाम बहुशोभमानामुमां हैमवतीं ताꣳ होवाच किमेतद्यक्षमिति॥ २५॥१२॥ इति तृतीयः खंडः ॥ ३॥

सा ब्रह्मेति होवाच ब्रह्मणो वा एतद्विजये महीयध्वमिति ततो हैव विदाञ्चकार ब्रह्मेति॥२६॥९॥ तस्माद्वा एते देवा अतितरामिवान्यान्देवान् यदग्निर्वायुरिन्द्रस्ते ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्शुस्ते ह्येनत् प्रथमोविदाञ्चकार ब्रह्मेति ॥ २७ ॥ २ ॥ तस्माद्वा इन्द्रोऽतितरामिवान्यान् देवान् स ह्येनन्नेदिष्ठं पस्पर्श स ह्येनत् प्रथमो विदाञ्चकार ब्रह्मेति॥ २८॥३॥ तस्यैष आदेशो यदेतद्विद्युतो व्यद्युतदा इतीतिन्यमीमिषदा इत्यधिदैवतम् ॥ २९ ॥४॥

ज्ञथाध्यात्मं यदेतद्गच्छतीव च मनोऽनेन चैत
दुपस्मरत्यभीक्ष्णं सङ्कल्पः॥ ३०॥ ५॥ तद्ध तद्ध-
नं नाम तद्धनमित्युपासितव्यं स य एतदेवं वेदा
ऽभि हैनं सर्व्वाणि भूतानि संवाञ्छन्ति॥३१।६॥
उपनिषदं भो ब्रूहीत्युक्ता त उपनिषद्ब्राह्मी-
वाव त उपनिषदमब्रूमेति॥ ३२॥७॥
तस्यै तपो दमः कर्म्मेति प्रतिष्ठा वेदाःसर्व्वाङ्गा-
नि सत्यमायतनम्॥ ३३॥८॥ यो वा एतामेवं
वेदापहत्य पाप्मानमनन्ते स्वर्गे लोके ज्येये
प्रतितिष्ठति प्रतितिष्ठति॥ ३४॥९॥ इतिचतुर्थः
खंडः। तलवकारोपनिषत्समाप्ता। ॐ तत्सत्॥

हे सोम्य पूर्व किसीएकसमय देवता ज्ञसुरों
का परस्पर युद्ध होताभया तहां सर्व देवताज्ञोंका पराजे
व सर्वका प्रेरक सर्वशक्तिमान् परब्रह्म परमात्मा जिस
की बलसत्तासे देवता ज्ञसुरोंका जय करतेभये परंतु
जिस सर्वशक्तिमान् सर्वात्माकी महिमासे ज्ञसुरोंका
जयकिया जिसकी जयमहिमाको नजानके इन्द्रादिदे-
वता उस जयमहिमाको परिच्छिन्न ज्ञपनापुरुषार्थ
मानके ज्ञासुरीसंपदारूप ज्ञसत्य ज्ञहंकारके ज्ञाश्र
य परस्पर विवादकरतेभये जो ज्ञसुरोंको मैंने जय

किया दूसरेनेकहा मैंनेजयकिया यह विजयमहिमा हमारीहै। हे सौम्य जब इंद्रादि श्रेष्ठ देवता परमात्मा की महिमाको न जानके इसप्रकार ज्ञासुरीसंपदा ज्ञसत्य ज्ञहंकाररूप ज्ञधर्मको प्राप्तभये तब सर्वान्तर्यामी परमात्मा विचारताभया जो यह दैवीसंपदावाले देवता भी ज्ञासुरीसंपदा ज्ञसत्य ज्ञहंकारके ज्ञाश्रयविवादकरतेहैं सो यहदेवता भी जो ज्ञसुरभावको प्राप्तभये तो विनाही समयके यह प्रलयकरेंगें ताते प्रथम इनके ज्ञसत्यज्ञहंकाररूपज्ञधर्मको नाशकर पश्चात् इनको ज्ञात्मोपदेशकरके दैवीसंपदारूपधर्मकीरक्षा करनीचाहिये। हेसौम्यइसप्रकारविचारपरमात्मा देवताओंसे कुछदूर ज्ञव्यक्तरूपसे ज्ञर्थात् हस्तपादादि ज्ञवयव ज्ञाकार रहित केवल ज्ञग्निउज्ज्वलप्रकाशरूप प्रकट होताभया तब वो इंद्रादि देवता प्रकाशमयब्रह्मकोदेख ज्ञाश्चर्यवान्होय विचारकरतेभये कि यह ज्ञग्निउज्ज्वल पूजनीय महान्प्रकाशकौनहै इसकी ज्ञानकरनाउचितहै क्यों जो मनकोई मायारूपसे ज्ञसुरही होय ज्ञथवा साक्षात् परब्रह्मही होय ऐसा शुद्ध पूजनीय प्रकाश मायाकीरचनामेंहोना ज्ञसंभवहै ताते ज्ञवश्य इस पूजनीय प्रकाशको जानना ज्ञावश्यकहैं। हेसौम्य इसप्रकार विचारके इंद्रादिदेवता ज्ञग्निदेवसे कहते

भये कि हे ग्रग्नि हे ज्ञानवान् यह जो ग्रापश्रीसर्वके स-
मक्ष महाउज्ज्वल प्रकाशहै तिसके समीपजाय ज्ञातकरो
कियह पूजनीयकौनहै। तब ग्रग्निनथास्तुकहके उसप्र-
काशकेसमीपजाय तुष्णींखड़ारहा उसपूजनीयप्रकाशके
ग्रागे प्रश्नकरनेकी भी सामर्थ्यनरही क्योंजो ग्रग्नि
ग्रपनेविषे परिच्छिन्न ग्रसत्य ग्रनात्मग्रहंकारको
धारके उसपरमात्माको जो कि बुद्धिग्रादि किसीकीभी
ज्ञानमें न ग्रावे तिसको जाननेकेग्रर्थगया तब परमा-
त्माने ग्रपनी विशेषशक्तिको ग्राकर्षणकर ग्रग्निजो
कि वाणीका देवताहै तिसको ग्रवाणी करदिया ताते
ग्रग्नि उसपरमात्माकेग्रागे तूष्णीं खड़ारहा। तबउ-
सप्रकाशमय पूजनीयब्रह्मने प्रश्नकिया कि तू कौन-
है तब परमात्माके प्रश्नद्वारा किंचित्वाक्यशक्तिपाय
ग्रग्निनेकहा मैं ग्रग्निहौं ग्ररु जातवेदाभी मुझको क-
हतेहैं सो मैं हौं। तब परमात्मानेकहा जो तू ग्रग्नि जा-
तवेदाहै तिसतेरेविषे क्या सामर्थ्यहै। तब ग्रग्निनेक
हा मैं सर्वके भस्मकरनेवालाहौं जोकि जगत्विषेयाव-
त्है तावत्को। हे सोम्य इसप्रकार ग्रग्निका साहंकार
वाक्य श्रवणकरके उस ग्रग्निकेग्रागे तेजोमयब्रह्मए
क सूखा तृणधरताभया ग्ररु कहा कि इसको भस्म
करो। तब ग्रग्नि इसवाक्यको श्रवणकरके वेगसमी

पजाय अपना सर्वसामर्थ्य प्रकटकरताभया जो कि प्रलयकालमें ब्रह्मांडदाहकेसमयकरेहै परंतु परमात्माकोदियेतृणको भस्मकरनेको शक्तिमान् न भया। तब अग्नि लज्जावान्होय उस पूजनीय ब्रह्मके समीपसे तूष्णीहोयदेवताके समीपजाय कहेताभया कि मैं इसको जाननेविषे समर्थ नहीं कि यह पूजनीयकौन है।

हे सौम्य जब उक्तप्रकार अग्नि उस पूजनीयब्रह्मके जाननेविषे असमर्थ भया तब सर्वदेवताओंनेवायुसेकहा हे वायु हे अन्तरिक्षमें चलनेवाले तुम जायके इस पूजनीय प्रकाशको जानो कि यह क्याहै। तब वायु तथास्तुकहके उस पूजनीय प्रकाशके समीप जाताभया अरु समीपजाय अग्निवत् प्रश्नकरनेकी शक्तिसे रहित तूष्णी खड़ारहा तब उस पूजनीयप्रकाशनेप्रश्नकिया कि तू कौनहै। तब वायुनेकहा कि वायु मेरानामहै अरु मातरिश्वा अर्थात् अंतरिक्षमेंचलनेवाला जिसको कहतेहैं सो भी मैं ही हौं। तब ब्रह्मने कहा तिसतेरेविषे क्या शक्तिहै। तब वायुनेकहा मैंसर्वको उठावना किंवा उड़ावनाहौं जोकुछ जगत्विषे पदार्थहैं तिनसर्वको। तब उस पूजनीय प्रकाशमय ब्रह्मने वायुके आगे भी तृणडाला अरु कहा कि इस तृणको उड़ाओ वा उड़ाओ। तब वायुअतृणकेसमी

पजाय ग्रपना सर्वपुरुषार्थकरताभया तथापि वो तृ-
ण वायु से न उठा न उड़ा तब वो वायु ग्रग्निवत् लज्जा
वान्होय तूष्णीं भया देवताग्रोंके समीपजाय कहता
हुग्रा कि हम इस यक्षके जाननेमें शक्तिमान् न हीं र
कि यह पूजनीयकौन है ॥

हे सौम्य इसप्रकारजब ग्रग्निवायु जो कि सर्वदेव
ताग्रोंमें परमपुरुषार्थीहैं सो भी उस ब्रह्मदत्त तृण
के जलावने उठावने विषे ग्रसमर्थभये लज्जावान्
होय ब्रह्मके समीपसे निवृत्तहुवे तब सर्वदेवताग्रोंने
विचारकर इंद्रसेकहा कि हे भगवन् ग्रापसर्वदेवता
ग्रोंके ग्रधिपति बल बुद्धिकरके सम्पन्नहो ताते हे
मघवा ग्राप इसपूजनीयकेसमीपजाय ज्ञातकर निश्च
यकरो कि कौन यह पूजनीय है।तब इंद्र तथास्तु कह
के उस पूजनीय प्रकाशमय ब्रह्मकेसमीपगया तब वो
पूजनीयप्रकाश तिरोधानहोगया। तब वो इंद्र खड़ा
होके विचारकरनेलगा कि देखो हमारे ग्रावतेहीयह
पूजनीयप्रकाश तिरोधानहोगया ग्रग्नि वायुसे तो उ
सने संभाषण भी किया ग्ररु हमारेसाथतो संभाषण
भी न भया। इसप्रकार इंद्र पश्चात्तापकरताभया परंतु
जिसस्थानपर खडारहा तहांसे ग्रग्नि वायुवत् निवृत्त
न होके उसहीस्थानपर उस पूजनीयप्रकाशमयब्रह्म

की जिज्ञासाकरता अपने देवराजत्वादि सर्वअभिमानसे रहित यही विचारताराहा कि उस पूजनीयप्रकाशका दर्शन भाषण मुझको कब होगा अरु कैसे होगा। हे सौम्य इसप्रकार जब इंद्र अपने सर्व अहंकारसे रहित शुद्ध भावसे भक्तिपूर्वक ब्रह्मदर्शनकी जिज्ञासासेखडारहा। तब परमात्मा इंद्रकी श्रद्धा भक्ति जिज्ञासा अपनेविषे देख उसही अवकाश प्रदेशमें समीपहीस्त्रीत्वको प्राप्तभया अर्थात् देवीस्वरूपसे प्रकटजो ब्रह्मतिसको प्राप्तभया अर्थात् इंद्रको उपदेशकरनेकेअर्थसाक्षात्परमात्मा ब्रह्मविद्यारूपसे प्रकटहोताभया तिसको उमा नामसे कहते हैं सो कैसीहैं उमानाम्नी ब्रह्मविद्या उत्तम सुवर्णवत् देहकान्ति अरु सुवर्णके आभूषणकरशोभित अत्यंत शोभायुक्त दर्शनीय परमपूज्य तिसको अवलोकनकरता इंद्रआश्चर्यवान्हुआ विचार करताभया जो यह अपने समक्ष प्रादुर्भूत देवरूपा परम पूजनीय देवीहैंतिससे प्रश्नकरिये कि यहां अत्यंतप्रकाशमय परमपूजनीयकौनथा। इसप्रकार इंद्र विचार उमानाम्नी ब्रह्मविद्या देवीके समीपजाय प्रणामकर प्रश्नकरताभया कि हे देवी जो यहां हमारे समक्षसे तिरोधानभया सो परमप्रकाशमयपूजनीयकौन था॥

हे सौम्य इसप्रकार जब ब्रह्मावतार उमादेवीसे इंद्र ने प्रश्नकियातब उस ब्रह्मावतार जगदंबा ब्रह्मविद्याने उपदेशकिया कि हे इंद्र जिसकी शक्तिकेलिये तुमने प्रश्नकियाहै सो प्रकाशमय परमपूजनीय परमात्माहै उसहीकी सत्तासे तुमने असुरोंका जयकियाहै उसकी विजयमहिमाको न जानके तुमने अपनेविषे विजयमहिमाका अभिमानवृथाकियाहै जो हमने असुरोंकाजयकिया परंतु सो जयकरनेकी महिमातो उसही स्वयंप्रकाश परमपूजनीय परमात्माकीहै तुम्हारीनहीं। हे सौम्य इसप्रकार जब ब्रह्मावतार उमानाम्नी ब्रह्मविद्या देवीने उपदेशकियातब इंद्रको ज्ञानभया जो वो प्रकाशमय परमपूजनीय ब्रह्मही था वो हमारे सर्वके आसुरीसंपदा असत्य अहंकाररूप अधर्मके नाशार्थही विशेष प्रकाशरूपसे प्रकटभयारहा ताते उस धर्मरक्षकको नमस्कारहै। अरु अस्मदादिकोई भी किसीकार्यके करनेमें समर्थनहीं जो कुछ जय पराजय आदिहोताहै सो सर्व उसपरमात्माकीही सत्तासे होताहै ताते सर्वत्र सर्वकार्यकरनेको एक सर्वशक्तिमान् परमात्माही समर्थहै औरनहीं। इसप्रकार विचार करता इंद्र उमाके उपदेशसे परमपूजनीय सर्वशक्तिमान् परमात्माकी महिमाकोजानके आप आसुरीसंप-

दा ज्ञप्रसत्य ज्ञहंकाररूप ज्ञधर्मसे रहित परमज्ञानंदि-
न शान्त ज्ञात्माहोताभया ॥

हे सोम्य ज्ञग्नि वायु इन्द्र यहतीनों देवता परमपूज-
नीय परमात्माके दर्शन संभाषण करतेभये एतदर्थ सर्व
देवताओंमें यह तीन देवता मुख्यहैं ज्ञरु सर्वप्रकार ऐ-
श्वर्य विभूतिकरके सम्पन्नहैं इनके समान ज्ञन्यदेवता
नहीं। ज्ञरु ज्ञग्निवायु यह दो देवता इंद्रके उपदेशसे
ब्रह्मको जानतेभये कि जिस पूजनीयप्रकाशके समीप
हमगये ज्ञरु जिसके दिये तृणमें भी हमारा सर्वपुरुषार्थ
निष्फलगया ताते वो सर्वशक्तिमान् परमपूजनीय ब्रह्म
ही था। इस प्रकार इंद्रके उपदेशसे ज्ञग्नि वायु ज्ञादिदे
वता ब्रह्मको जानतेभये। ज्ञरु इंद्र साक्षात् ब्रह्मावतार
उमानाम्नी ब्रह्मविद्याकोजो कि परमात्माका व्यक्तज्ञव-
तारहै दर्शन संभाषण ज्ञरु परमात्मविषयक उपदेश
ज्ञान पावताभया ताते ज्ञन्यब्रह्म दर्शियोंमें सर्वसेप्रथ-
म जाननेवाला सर्वसे श्रेष्ठ सर्वका ज्ञधिपतिहै ॥

हे सोम्य ज्ञब उस परब्रह्म को दृष्टान्त दार्ष्टान्त कर-
के ज्ञरु सर्वान्तर सर्वका प्रकाशक प्राणादि सर्वकोंस-
त्तादेके चलावनेवाला सर्वान्तर्यामी सर्वका ज्ञपना ज्ञा-
प ज्ञाचार्योंने शिष्योंसेकहाहै सो तुम्हारेप्रति संक्षेप-
मात्र कहतेहैं। हे सोम्य जैसे विद्युत[बिजली]प्रकाश

वान् प्रकट होय अग्नाकाशमें तिरोधान होय है तैसे ही विद्युत्का भी प्रकाशक अन्तरात्मा सर्व देवनाओंके समक्ष सर्वकी आसुरी संपदा असत्य अहंकार रूप अधर्मको नाशकरनेके अर्थ अरु निरभिमानता दैवी संपदा रूप धर्मको स्थापिनकरनेके अर्थ प्रादुर्भूत होय पुनः विद्युतवत् तिरोधान होनाभया। अरु इंदकी विशेष श्रद्धा भक्ति जिज्ञासा अपनेविषे देख उमानाम्नी अत्यंत शोभावान् ब्रह्मविद्यादेवीरूपसे प्रकट दर्शनदे अपने स्वरूपका बोधकराया। अरु इंद्रादि देवनाओंको निरभिमानता आदि दैवी संपदा में स्थापिनकर धर्मकी रक्षा करनाभया॥

हे सौम्य जिस निरुपमब्रह्मको उपमा उपमेय करके विशेष प्रकाशद्वारा अधिदैवरूपसे प्रतिपादनकिया। अब निसही परमात्माका उपदेश अध्यात्मरीत्याश्रवणकरो। जिसपरब्रह्मकीसत्तासे देवनाओंने असुरोंका जयकिया सोई सर्वकासाक्षी स्वयंप्रकाश चैतन्य सर्वका अपनाआप प्रत्यगात्माहै निसही की सत्तारूपप्रकाशको पाय प्राण मन इंद्रियआदि सर्व अपना२ व्यापारकरते हैं सोई सर्वत्र सर्वकादृष्टा ब्रह्महै इसहीसे इसको 'तद्वन' नामसेकहतेहैं वो ब्रह्म सर्वको भजनीयहै तिससेप्रत्यगात्मन वहब्रह्म सर्वको भजनीय इसगुणद्वारा उपासनाकरने

योग्यहै जो कोई इसब्रह्मकी इसप्रकार उपासनाकरता है उसको संपूर्णभूत सर्वओरसे निश्चयसे प्रार्थनाकरतेहैं। अर्थात् उस उपासकको देवमनुष्यादिसम्पूर्ण भूत सर्वप्रकारसे निश्चयपूर्वक शुश्रूषादिद्वारा प्रार्थनाकरतेहैं जैसेकि ब्रह्मकी। अर्थात् जैसे ब्रह्मसर्वकरके उपासनीयहै तैसेही ब्रह्मवेत्ताभी सर्वकरके उपासनीयहै क्यों कि {ब्रह्मविद्ब्रह्मैवभवति} ब्रह्मवेत्ताब्रह्मही होताहै। हे सौम्य इसप्रकार परमात्माके अवतार सगुणब्रह्मकी उपासनाकाफल निरूपणकरके अब इस उपनिषद्के आदिसंबंधको उपक्रम उपसंहारको अन्वयऐक्यकरतेहैं पूर्व वैराग्यशील आत्मकामा र जिज्ञासुके {केनेषितं} आदि प्रश्नऊपर आचार्यने {श्रोत्रस्यश्रोत्रं} इत्यादि आरभ्य {सर्वाणिभूतानिसंवांछन्ति} पर्यंत निर्विशेष सविशेष व्यष्टी समष्टि अधिदैव अध्यात्मरीत्या {सबाह्याभ्यंतरोह्यज} इत्यादिप्रमाणसे फलवाद सहित प्रतिपादनकिया तदनंतर पुनः जिज्ञासुका {उपनिषदंभोब्रूहि} प्रश्नभयासो एतदर्थहै कि जोब्रह्म आपने सर्वात्माकरकेकहा सोई पराकाष्टा पर ब्रह्महै किंवा कोई औरहै जो इस सर्वात्मासेइतर ब्रह्महोयतो तिसको भी कहिये। तब श्रुतिके {"अयमात्माब्रह्म""नान्यः परमस्ति"} इनउभयश्रुतिकी एकवा-

कथता प्रमाणसंबंधसे ग्रंथसमाप्तकरके फलवादकहतेहैं। जो कोई कहेप्रकार आचार्यकेवाक्य श्रुतिप्रमाणसे आत्मतत्वका श्रवणकरतेहैं तिनपुरुषोंके तपकर्मादि सफलहोतेहैं। अथवा तिसपरमात्माकी प्राप्त्यर्थ तपदम कर्म आदि उपायहैं। अरु वेदचार अंगोंसहित चरणवत्है। अरु सत्य उसका आयतनहै। जो पुरुषनिश्चयसे इसब्रह्मविद्याको इसकहेप्रकारसेजानते हैं सो अपने सर्वपापोंको नाशकरके अनन्त सर्वोत्तम सुखरूपब्रह्ममें प्राप्तहोतेहैं॥ इति केनोपनिषदके ३-४ खंडः॥

हे सौम्य इस श्रुतिकी आख्यायिकासे सर्वशक्तिमान् परमात्माके धर्मरक्षणार्थ अवतार होने न होनेके विषेमें अरु विनाही अवतारधारणकिये सर्वकुछ करनेकीसामर्थ्यताके विषेमें विचारकरो जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा सर्वकार्यकरनेमें समर्थ होतसंते भीवो अपनी आदिजो नीतिहै तिसको अन्यथानहींकरता। यह उसकी आदि नीतिहै जो आकाशहोयके सर्वको अवकाशदेना वायु सूत्रआत्मा होयके सर्वको धारन करना भ्रमावना अग्नि होयके तपावना पचावना मेघहोयके जलवर्षाकरना जलहोयके सर्वको शीतल कोमलकरना पृथिवीहोयके सर्वकोधारणकरना अन्नोत्पादनकरना अन्नहोयके सर्वकीउत्पत्तिपालनं

करना मृत्यु होय सर्व को जन्म करना मेघ होय वरषा कर
नी। हे सौम्य इत्यादि जे सर्व शक्तिमान् परमात्मा की
नीति हैं सो अवश्य तैसेही होता है जिसको अन्यथा
करने को कोई भी समर्थ नहीं किन्तु सर्व शक्तिमान् प
रमात्मा सर्व करने न करने अन्यथा करने में समर्थ हैं
तथापि वो अपनी ही स्थापित रीती आदि नीति को
कदापि अन्यथा करता नहीं वो तो उस विद्वानघन पर-
मात्मा ने पूर्व विचार के ही किया है। ताते यह भी पर-
मात्मा की नीति है कि जिस २ प्रकार सर्व शक्तिमान् प-
रमात्मा अपने स्थापित किये धर्म की रक्षा अरु अधर्म
की हानि अरु दुष्टी असुरों का नाश अरु संत महात्मा
भक्तजनों का मनोवांछित अभीष्ट सिद्ध होता जाने हैं।
तिसी प्रकार व्यक्त अव्यक्त देव मनुष्य स्त्री पुरुष आ-
दि आकृति अपने विषे धार तत्तत्कार्य को करना अरु
अपने वास्तव स्वरूप में ज्यों का त्यों रहना। ताते य-
ह जो परमात्मा की आदि नीति हैं जो अपने स्थापि-
त किये धर्म की असुरादिकों से रक्षा अवतार शरीरसे
ही करना सो तैसेई होता है। ताते हे सौम्य जे कुत-
र्की नास्तिक पुरुष ईश्वर अवतार कों नहीं मानते ति-
नके न मानने से ईश्वर अवतार का होना न होय सो
होना नहीं। जैसे उल्लू पक्षी को नेत्र दोष से सूर्य न दीख

के अंधकार ही दीखता है सो उसको सूर्य न दीखने से सूर्य नहीं ऐसा होना नहीं। तैसे ही कुतर्की नास्तिकों के ईश्वर अवतार न मानने से ईश्वर अवतार नहीं। सो होना नहीं। और जो पुरुष अपने को वेदवादी आर्य धर्म्मावलंबी मानते हैं और ईश्वर का अवतार होना नहीं मानते तिन आस्तिकरूप नास्तिकों के मुखतर्क पर यह वेद सिद्धान्त परविद्या के वाक्य प्रमाणरूपी वज्र का प्रहार कर खंडन करो॥ और जो इस श्रुति में अलंकार दोषक आदि तर्क से अप्रमाण कहैं तो उसी न्याय प्रमाण उनके प्रमाण किये वेद वाक्य का अप्रमाण होना संभव है। और जब परस्पर के विवाद से उभय पक्ष में कुतर्क खड़ी भई तब परस्पर की श्रुतियों में दोषकादि दोष से अप्रमाणता सिद्ध भई तब संपूर्ण वेद अप्रमाण होगा। और वेद जो है सो छन्द रूप है और जहां छन्द हैं तहां अलंकार हैं जैसे छन्दोग्य में मधुविद्या आदि विद्या साम विद्या संहिता में यज्ञ विद्या पुरुषसूक्त में सहस्र शीर्षादि यह सर्व अलंकार संयुक्त वेद वाक्य हैं तथापि वेद कुछ काव्य नहीं जो तिस के वाक्य में काव्यालंकारादि दोष मान के अप्रमाण किया जाय। वेद तो साक्षात् परमात्मा के वाक्य हैं तिसकी रचना अकस्मात् छंद

रूपसे ही भई है अरु छन्द का अरु अलंकार का परस्पर समानाधिकरण संबंध हैं नाते जो कदापि ईश्वर वाक्य छन्द रूपी वेद में काव्यालंकारादि दोष मान के कुतर्क से अप्रमाणता उठेगी तो संपूर्ण वेद पर हरताल लग जायगी तातें वेदवादी को वेद में श्लेषक अलंकारादि दोष आरोपण करना योग्य नहीं। हे सोम्य यह जो तुम को वेदाख्यायिका कहीहै तिस में काव्यालंकार नहीं यह साक्षात ब्रह्म विद्या है। तातें हे सोम्य जे धूर्त्त पुरुष अपने को वेदमतावलंबी मान आर्य विदित करते हैं अरु वेद के ही सिद्धान्त वाक्य में तर्क कर अप्रमाण करते हैं तिनको वेदमतावलंबी न मान के नास्तिक परमतावलंबी अनार्य पुरुष जान ना अरु तिनके वाक्य न मान के उनका संग परित्याग करना। अरु जे सनातनीय आमनाय से वेदोक्त धर्म को सर्व प्रकार आस्तिकरीत्या मान के ब्रह्म आत्मा का एकत्व अनुभव कर्त्ता, आत्म वेत्तों का संग कर तिनके वाक्यों में अतर्क विश्वास से धर्माचरण करना अरु ब्रह्म आत्मा की तत्त्वमस्यादि महावाक्याद्वारा निःसंशय एकता श्रवण मनन अनुभव अध्यासकर तत्स्थिति पाय जन्म मरण से रहित परम निर्वाण पदको प्राप्त होना यही कर्त्तव्यता अरु यही

परम पुरुषार्थ हैं आगे जो इच्छा ॥ ॥ ॥

"यथेच्छसि तथा कुरु" जो इच्छा हो सो करो॥

॥ इति श्री यमुना शंकर गुर्जरनागरब्राह्मण॥

कृ॰ अवतारसिद्धि नामा ग्रंथः समाप्तः॥ ॥

॥ ओमिति शुभमस्तु हरिः ॐ॥

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
सभाविलास	युक्तिबहत्तरी	अमरविनोद
तुलसीशब्दार्थप	वर्णावली सुमन	वैद्यजीवन
भजनावली	चहारदरवेश	सौषधिसंग्रहकल्प
प्रेमरत्न	किस्सा हातमताई	वल्ली
युगलविलास	अपूर्वकथा	क्षारतंत्रसागरबड़ावली
चित्रचंद्रिका	किस्सागुलमनोहर	वैद्यमनोत्सव
बारहमासावलदेव	सहस्ररजनीचरित्र	दिलल्लगान
प्रभार	रानिन्मनकाइतिहास	रसायन प्रकाश
मनोहरलहरी	सीताहरण	दुलाजुल गुर्व्वा
गंगालहरी	सतीविलास	ज्योतिषभाषा
यमुनालहरी	किस्सासर्द औरत	जातकचंद्रिका
जगद्विनोद	संगीतप्रहार	जातकालंकार
शृंगारबत्तीसी	दरसी	देवज्ञाभरण
राग	अक्षरावली	ज्ञानसर्वोदय
रागप्रकाश	स्वयंबोध	रमलसार
लावनी	ज्ञानचालीसी	रमलनोरत्न
किस्सावगैरह	दोहावली	रुद्रजाल
नानाधर्मोपदेशसंग्रहावली	बालाबोध	संस्कृतकीपुस्तकें
ब्रह्मसार	विद्यार्थीकीप्रथमपु	लघुकौमुदी
शिवसिंहसरोज	किताबजंत्री	सिद्धान्तचन्द्रिका
भक्तमाल	गणितकामधेनु	भाषातत्वप्रकाश
द्वंद्वसभा	लीलावती	पंचमहाकाव्य
विक्रमविलास	पटवारियोंकीपुस्तक	निर्णयसिंधु
वैतालपचीसी	७ भाग	कर्मविपाक
सिंहासनबत्तीसी	वैद्यकभाषा	भगवद्गीतापंचरत्न
पद्मावतीखंड	निघण्टु	दुर्गापाठमूलतथाप्त

नामकिताब	नामकिताब	नामकिताब
विष्णुभागवत	संध्यापद्धति	गोकर्णीमाहात्म्य
कथा यमद्वितीया	व्रतार्क	श्रीगोपालसहस्रनाम
अपराधभंजनस्तोत्र	भगवद्गीता टीका ह०	कथा सत्यनारायण०
कायस्थकुलभास्कर	भगवद्गीता टी० अ०	सटीक
कायस्थधर्मनिरूपण	गीत गोविंद	हनूनाटक
नथा छोटा	कथा सत्यनारायण	हनुमान बाहुक
मथुरा सभा	परमार्थसार	जनक पचीसी
ज्योतिष	शार्ङ्गधरसंहिता	हरिहरसगुण निर्गु०
मुहूर्त्तगणपति	पाराशरी सटीक	गणपदावली
मुहूर्त्तचक्रदीपिका	शीघ्रबोध सटीक	वनयात्रा
मुहूर्त्तचिंतामणिस०	लघुजातक	कायस्थवर्णनिर्णय
मुहूर्त्तदीपक	षट्पंचाशिका	बिहारवृन्दावन
वृहज्जातक सटीक	सामुद्रिक	समरबिहारवृन्दावन
जातकालंकार	गरुड़पुराण	कल्पभाष्य
जातकाभरण	रामविवाहोत्सव	लक्ष्मीसरस्वतीसंवाद
होरामकरन्द	अपरोक्षानुभव	सुन्दरविलास
मुहूर्त्तमार्त्तंडस०	**मुतफ़र्क़ात**	उपदेशचंद्रिका
संस्कृत उर्दूटीका	शनिश्चर की कथा	मंगलविनोद
मनुस्मृति	ज्ञानमाला	विजयचंद्रिका
विष्णुहारीत	गोपीचंद भरतरी	सिद्धांतसंग्रह
महिम्नस्तोत्र	कथाश्री गंगा जी	नवीनसंग्रह
व्रतार्क	अवधयात्रा	रामविनयशतक
याज्ञवल्क्यस्मृति	भरतरी गीत	स्वप्नप्रकाश
संस्कृत भाषाटी०	रानलीला वनागलीला	अद्भुतरमायण
अमरकोषनीलोंकार		वाल्मीकीयरमायण
याज्ञवल्क्यस्मृति	दोहावलीरत्नावली	